

उड़ान

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की उड़ान

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
की त्रैमासिक गृह पत्रिका



जुलाई-सितंबर 2026

FOLLOW US ON:



Scan me!





उड़ान के जुलाई-सितम्बर अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। इस अंक में विश्वविद्यालय की अनेक महत्वपूर्ण घटनाएँ समाविष्ट हैं। लोक भवन में आयोजित कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री गुरमीत सिंह के हाथों मुक्त ज्ञान कोश का लोकार्पण हुआ। मुक्त ज्ञान कोश ई -पुस्तकों एवं अध्ययन सामग्री के साथ शोध कार्य, शोध डेटा, शोध प्रबंध तथा अन्य शैक्षणिक संसाधन की दृष्टि से उपयोगी है। लोकभवन में माननीय श्री राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति महोदय के हाथों विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित तीन पुस्तकों - 21 वीं सदी : चुनौती एवं अवसर, विकसित भारत @2047, विकसित उत्तराखंड : राज्यपाल के पाँच स्वप्न और संदृष्टि का लोकार्पण हुआ। इस अवधि में विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद् में कई महत्वपूर्ण निर्णय किए गए। भविष्य में होने वाली नियुक्तियों समेत कई महत्वपूर्ण निर्णय विश्वविद्यालय की कार्य परिषद् में संस्तुत हुए। नेपाल के शिक्षार्थियों हेतु उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में अध्ययन करने का रास्ता खुला तथा इस संबंध में आवश्यक प्रक्रिया पूर्ण हुई। विश्वविद्यालय में हरेला महोत्सव का व्यापक तौर पर आयोजन किया गया। हरेला महोत्सव के अंतर्गत 500 से अधिक फलदार एवं औषधीय वृक्षों का रोपण हुआ। हरेला महोत्सव के इस आयोजन में सांसद श्री अजय भट्ट, विधायक डॉ मोहन सिंह बिष्ट, कुमाऊं एवं सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो दीवान सिंह बिष्ट एवं प्रो सतपाल सिंह बिष्ट जी की विशेष उपस्थिति रही। विश्वविद्यालय में राष्ट्र गीत श्री वन्दे मातरम के 150 वर्ष पूर्ण होने पर राष्ट्र चेतना से जुड़े अनेक कार्यक्रम संचालित हुए। इसी प्रकार 80 वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर उड़ान पर विश्वविद्यालय में ध्वजारोहण के साथ ही अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। ये कार्यक्रम राष्ट्रीय बोध को और पुष्ट करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण थे।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा ने छात्रों -अभिवावकों एवं समाज से जुड़ने की नयी पहल करते हुए जनसंवाद के कार्यक्रम आयोजित किए। जनसंवाद कार्यक्रम विश्वविद्यालय की जनभागीदारी का परिचायक है। विश्वविद्यालय में पीएनबी बैंक के सहयोग से नए कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन हुआ। ऊर्जा संरक्षण एवं हरित कैम्पस की अवधारणा के क्रम में विश्वविद्यालय में ईजी चार्जिंग स्टेशन की शुरुआत हुई। उत्तराखंड की संस्कृति को समृद्ध करने की दृष्टि से ढोल - दमाऊं कार्यक्रम एवं हिमालय दिवस कार्यक्रम का आयोजन भी विशेष महत्त्व रखता है। इसी प्रकार भाषा संवर्द्धन की दृष्टि से हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का वृहद आयोजन किया गया।

उड़ान के इस अंक में इन सभी कार्यक्रमों की झलक देखी जा सकती है। उड़ान के जुलाई -सितम्बर अंक के संपादन हेतु मैं इसके संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ।

प्रो. नवीन चंद्र लोहनी
कुलपति

ज्ञान, नवाचार और सामाजिक सरोकारों की नई दिशा

शिक्षा केवल ज्ञान अर्जित करने का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के भविष्य को नई दिशा देने का सशक्त आधार है। जब शिक्षा भौगोलिक दूरियों, आर्थिक सीमाओं और सामाजिक विषमताओं को पार कर प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचती है, तभी उसका वास्तविक उद्देश्य सार्थक होता है। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय इसी दृष्टि के साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से ज्ञान, अवसर और संभावनाओं के नए द्वार खोलने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका 'उड़ान' का यह अंक हमारी इसी विकास यात्रा, अकादमिक प्रतिबद्धता और सामाजिक उत्तरदायित्व का प्रतिबिंब है। इसमें संकलित गतिविधियाँ, उपलब्धियाँ और पहल विश्वविद्यालय के उस संकल्प को अभिव्यक्त करती हैं, जिसके केंद्र में शिक्षार्थी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और समाज का समग्र विकास है।

वर्तमान समय में उच्च शिक्षा का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, नवाचार और ज्ञान के नए माध्यमों ने शिक्षण-अधिगम की संभावनाओं का विस्तार किया है। ऐसे परिवेश में मुक्त विश्वविद्यालयों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। हमारा दायित्व केवल पाठ्यक्रमों का संचालन करना नहीं, बल्कि शिक्षा को अधिक सुलभ, समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और रोजगारोन्मुख बनाना भी है।

इसी दिशा में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित डिजिटल शैक्षणिक मंच 'मुक्त ज्ञान कोष' एक महत्वपूर्ण पहल है। ई-पुस्तकों, अध्ययन सामग्री, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों और अन्य शैक्षणिक संसाधनों को एक मंच पर उपलब्ध कराने का प्रयास ज्ञान तक पहुँच को व्यापक बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कदम है। उत्तराखण्ड जैसे पर्वतीय राज्य में, जहाँ भौगोलिक परिस्थितियाँ अनेक बार शिक्षा तक पहुँच को चुनौतीपूर्ण बनाती हैं, डिजिटल माध्यम शिक्षा के समान अवसर सुनिश्चित करने में विशेष भूमिका निभा सकते हैं।

किसी भी विश्वविद्यालय की प्रगति का वास्तविक आकलन केवल उसके भवनों, कार्यक्रमों या उपलब्ध संसाधनों से नहीं, बल्कि इस बात से होता है कि वह अपने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं के प्रति कितना संवेदनशील है। ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया में अतिरिक्त भुगतान शुल्क समाप्त करने की पहल तथा 'सूचना, संवाद और समाधान' के अंतर्गत जन संवाद कार्यक्रम इसी विद्यार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करते हैं। शिक्षार्थियों के प्रश्नों को सुनना, उनकी समस्याओं का समाधान करना और व्यवस्थाओं को अधिक पारदर्शी बनाना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अनिवार्य आयाम हैं।

शिक्षा की गुणवत्ता का दूसरा महत्वपूर्ण आधार शोध और नवाचार है। शोध तभी सार्थक होता है, जब वह अकादमिक सीमाओं से आगे बढ़कर समाज की वास्तविक समस्याओं को समझने और उनके समाधान में योगदान दे। विश्वविद्यालय में शोध कार्यशालाओं, शोधार्थियों की प्रगति समीक्षा, अकादमिक सहयोग और अंतर्विषयक अध्ययन को प्रोत्साहित करने के प्रयास इसी उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप शैक्षणिक सुधार, संस्थागत गुणवत्ता आश्वासन और विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग भी भविष्य की अकादमिक चुनौतियों के लिए हमारी तैयारी को सुदृढ़ करते हैं।

इसी क्रम में ज्ञान के साथ संस्कृति और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व भी उतना ही आवश्यक है। हरेला महोत्सव के अंतर्गत वृक्षारोपण, फलोद्यान, मियावाकी वन और पौधालय की स्थापना पर्यावरण संरक्षण के प्रति विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। हिमालय दिवस, सांस्कृतिक गतिविधियाँ तथा राष्ट्रीय चेतना से जुड़े आयोजन विद्यार्थियों और विश्वविद्यालय परिवार को अपनी जड़ों, परंपराओं और सामाजिक दायित्वों से जोड़ते हैं। हमारा विश्वास है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल कुशल पेशेवर तैयार करना नहीं, बल्कि संवेदनशील, जिम्मेदार और विवेकशील नागरिकों का निर्माण करना भी है।

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल संचार के विस्तार ने पत्रकारिता, मीडिया शिक्षा तथा जनसंचार के क्षेत्र में भी नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। इन परिवर्तनों के बीच तथ्यपरक सूचना, मीडिया साक्षरता, नैतिकता और सामाजिक संवेदनशीलता का महत्व बढ़ा है। एक मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में हमें नई तकनीकों को अपनाते हुए मानवीय मूल्यों, आलोचनात्मक चिंतन और ज्ञान की विश्वसनीयता को समान महत्व देना होगा। तकनीक हमारे लिए साधन है; शिक्षा का अंतिम लक्ष्य मानवीय क्षमता का विकास और समाज का कल्याण है। विश्वविद्यालय की इन पहलों के पीछे शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, अध्ययन केंद्रों, सहयोगी संस्थानों और शिक्षार्थियों का सामूहिक योगदान है। संस्थागत उपलब्धियाँ तभी स्थायी बनती हैं, जब वे सामूहिक संकल्प, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और निरंतर सुधार की भावना से जुड़ी हों। हमें अपनी उपलब्धियों पर गर्व करते हुए आत्ममूल्यांकन, नवाचार और बेहतर कार्यप्रणाली के लिए निरंतर तत्पर रहना होगा।

इसी विश्वास और संकल्प के साथ 'उड़ान' के इस अंक के माध्यम से समस्त पाठकों, शिक्षार्थियों और विश्वविद्यालय परिवार का हार्दिक अभिनंदन।

प्रो. राकेश चन्द्र रयाल

प्रधान संपादक,

'उड़ान'

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

‘मुक्त ज्ञान कोष’ का लोकार्पण, दूरस्थ क्षेत्रों तक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहल

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा विकसित डिजिटल शैक्षणिक मंच ‘मुक्त ज्ञान कोष’ का लोकार्पण माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेवानिवृत्त) ने लोक भवन में किया। इस अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी एवं टीम को इस पहल के लिए बधाई देते हुए इसे ज्ञान को समाज की शक्ति और राष्ट्र निर्माण का माध्यम बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। मुक्त ज्ञान कोष में विश्वविद्यालय की ई-पुस्तकों एवं अध्ययन सामग्री के साथ शिक्षकों के शोध कार्य, शोध-पत्र, शोध डेटा, शोध प्रबंध तथा अन्य शैक्षणिक संसाधन उपलब्ध कराए गए हैं।



‘मंच के माध्यम से देश-विदेश के मुक्त एवं विश्वसनीय शैक्षणिक संसाधनों तक भी पहुंच बनाई जा सकेगी, जिससे शिक्षार्थी, शिक्षक एवं शोधार्थी अध्ययन और शोध के लिए सामग्री एक ही डिजिटल मंच पर प्राप्त कर सकेंगे। राज्यपाल ने उत्तराखण्ड की भौगोलिक परिस्थितियों के संदर्भ में मंच की उपयोगिता रेखांकित करते हुए कहा कि दूरस्थ एवं पर्वतीय क्षेत्रों के शिक्षार्थियों तक गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री पहुंचाना समान शैक्षणिक अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि भौगोलिक दूरी ज्ञान की पहुंच में बाधा नहीं बननी चाहिए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी सहित विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं विभिन्न विद्याशाखाओं के निदेशक उपस्थित रहे। ‘मुक्त ज्ञान कोष’ को विश्वविद्यालय की डिजिटल शिक्षा एवं ज्ञान-साझाकरण की दिशा में महत्वपूर्ण पहल के रूप में विकसित किया गया है।

लोक भवन में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की तीन पुस्तकों का विमोचन

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा तैयार एवं प्रकाशित तीन महत्वपूर्ण पुस्तकों का विमोचन लोक भवन, देहरादून में आयोजित एक गरिमामय समारोह में उत्तराखण्ड के राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेवानिवृत्त) के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी, राज्यपाल के सचिव श्री रविनाथ रामन, राज्य के विभिन्न सरकारी एवं निजी विश्वविद्यालयों के कुलपति तथा लोक भवन एवं विश्वविद्यालय के अधिकारी उपस्थित रहे। विमोचित पुस्तकों में '21वीं सदी: चुनौतियां और अवसर' (21st Century Challenges), 'विकसित भारत@2047 आत्मनिर्भर, समावेशी और सतत राष्ट्र निर्माण के बढ़ते कदम' तथा 'विकसित उत्तराखण्ड: राज्यपाल के पंच स्वप्न और संदृष्टि' शामिल हैं। ये तीनों पुस्तकें वैश्विक, राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक, तीनों स्तरों पर विकास और भविष्य की संभावनाओं को एक सूत्र में पिरोती हैं।

'21वीं सदी: चुनौतियां और अवसर' वर्तमान सदी के समक्ष उपस्थित जटिल प्रश्नों और उनसे उपजने वाली नई संभावनाओं पर विमर्श प्रस्तुत करती है। 'विकसित भारत@2047' स्वतंत्रता के शताब्दी वर्ष तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के राष्ट्रीय संकल्प के संदर्भ में आत्मनिर्भरता, समावेशिता और सतत विकास के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालती है। वहीं 'विकसित उत्तराखण्ड: राज्यपाल के पंच स्वप्न और संदृष्टि' राज्यपाल की विकास-दृष्टि के आलोक में उत्तराखण्ड के भविष्य की दिशा पर केंद्रित है। इन पुस्तकों के माध्यम से आत्मनिर्भरता, नवाचार, ज्ञान, शिक्षा और सतत विकास जैसे विषयों के साथ देश एवं प्रदेश के भविष्य पर गंभीर विचार प्रस्तुत किए गए हैं।



पुस्तकों के संपादन मंडल में विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. मंजरी अग्रवाल, प्रो. डिगर सिंह फर्साण, प्रो. जितेंद्र पाण्डेय एवं प्रो. कमल देवलाल शामिल रहे। उनके साथ विश्वविद्यालय के अन्य अधिकारी एवं शिक्षक भी कार्यक्रम के साक्षी बने। विश्वविद्यालय की ओर से इन पुस्तकों के प्रकाशन को अकादमिक एवं बौद्धिक गतिविधियों की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल बताया गया। यह प्रकाशन विश्वविद्यालय की उस भूमिका को भी रेखांकित करता है, जिसके अंतर्गत वह शिक्षण के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक विकास से जुड़े समसामयिक विषयों पर गंभीर विमर्श को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

यूओयू की 46वीं कार्य परिषद की बैठक सम्पन्न

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की 46वीं कार्य परिषद की बैठक कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय अतिथि गृह में सम्पन्न हुई। बैठक में पिछली कार्य परिषद की बैठक के कार्यवृत्त एवं कार्यवाही के अनुमोदन के साथ विश्वविद्यालय के प्रशासनिक, शैक्षणिक एवं संस्थागत विकास से जुड़े विभिन्न प्रस्तावों पर विचार-विमर्श किया गया। कार्य परिषद ने शैक्षणिक पदों की चयन प्रक्रिया, नए अध्ययन एवं विशेष अध्ययन केंद्रों की स्थापना, व्यक्तिगत छात्रवृत्ति योजना, अस्थायी आधार पर सहायक प्राध्यापकों की नियुक्ति, सामुदायिक रेडियो अनुभाग में कार्मिक चयन, पुनर्नियोजन तथा केंद्रीय मूल्यांकन के मानदेय निर्धारण सहित विभिन्न प्रस्तावों को संस्तुति प्रदान की गई। इनमें नए शैक्षणिक कार्यक्रमों एवं पाठ्यक्रमों का विकास, विनियमों में संशोधन, शैक्षणिक एवं शोध गतिविधियों का सुदृढ़ीकरण,

परीक्षा एवं मूल्यांकन व्यवस्था में सुधार तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप अकादमिक सुधार शामिल रहे। बैठक में कार्य परिषद के बाह्य एवं नामित सदस्यों ने ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से सहभागिता की। विश्वविद्यालय के कुलसचिव, वित्त नियंत्रक, परीक्षा नियंत्रक, विभिन्न विद्याशाखा के निदेशक एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी बैठक में प्रतिभाग किया। कार्य परिषद के निर्णयों को विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता, प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण एवं संस्थागत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण माना गया।



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की 36वीं विद्यापरिषद की बैठक में अनेक महत्वपूर्ण शैक्षणिक प्रस्तावों को मिली मंजूरी

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की 36वीं विद्यापरिषद की बैठक कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय के अतिथि गृह में हाइब्रिड मोड में सम्पन्न हुई। बैठक में बाह्य विशेषज्ञ सदस्यों ने ऑनलाइन तथा विश्वविद्यालय के आंतरिक सदस्यों ने प्रत्यक्ष रूप से सहभागिता की। कुलसचिव एवं सदस्य सचिव डॉ. खेमराज भट्ट द्वारा प्रस्तुत कार्यसूची के सभी 19 प्रस्तावों पर विस्तृत विचार-विमर्श के बाद उन्हें सर्वसम्मति से अनुमोदित एवं संस्तुत किया गया।



बैठक में 35वीं विद्यापरिषद की कार्यवाही एवं अनुपालन रिपोर्ट का अनुमोदन किया गया। साथ ही यूजीसी-डीईबी से प्राप्त मान्यता के आधार पर बी.एड. (ओडीएल) एवं बैचलर ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन साइंस कार्यक्रमों के संचालन, नेपाली विद्यार्थियों के प्रवेश हेतु मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी), शोधार्थियों के अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक कार्यक्रमों में सहभागिता के लिए प्रायोजन नीति तथा पीएच.डी. प्रवेश व्यवस्था से संबंधित प्रस्तावों को स्वीकृति प्रदान की गई। परिषद ने 'स्वामी विवेकानन्द उत्तराखण्ड ई-पुस्तकालय योजना', शैक्षणिक सत्र 2025-26 में पुरानी अध्ययन सामग्री

के निःशुल्क वितरण, दीक्षांत समारोह से पूर्व उपाधि प्रदान करने की व्यवस्था, कृषि एवं उद्यानिकी विषयों के संचालन तथा रसायन विज्ञान एवं गणित विभाग के शोधार्थियों की पीएच.डी. मौखिक परीक्षाओं की आख्या को भी अनुमोदित किया। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के अध्ययन केन्द्रों पर एनसीवीटी (NCVT) से मान्यता प्राप्त कार्यक्रमों के संचालन की नियमावली, सीआईक्यूए (CIQA) की संस्तुतियों, विभिन्न विद्याशाखाओं के बोर्ड ऑफ स्टडीज़ की अनुशंसाओं, परीक्षा परिणामों में प्राप्त भिन्नताओं से संबंधित विषयों तथा शिक्षार्थियों के हित में दूरदर्शन उत्तराखण्ड पर प्रतिदिन 30 मिनट का समय स्लॉट उपलब्ध कराने के प्रस्तावों को भी स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक में प्रो. एच.सी. पोखरियाल, प्रो. पी.एस. बिष्ट, डॉ. मनु प्रताप सिंह तथा डॉ. एच.सी. पुरोहित सहित बाह्य विशेषज्ञों ने ऑनलाइन सहभागिता की। विश्वविद्यालय के विभिन्न विद्याशाखाओं के निदेशक, संकाय सदस्य एवं आमंत्रित सदस्य भी बैठक में उपस्थित रहे।

शैक्षणिक सहयोग से शिक्षा और शोध को मिलेगा नया आयाम

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी एवं रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय (आरएनटीयू), भोपाल के मध्य शिक्षा, शोध एवं नवाचार को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) संपन्न हुआ। यह समझौता रविन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. संतोष चौबे, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) नवीन चन्द्र लोहनी तथा आरएनटीयू के कुलपति प्रो. (डॉ.) रवि प्रकाश दुबे की गरिमामयी उपस्थिति में दोनों विश्वविद्यालयों के अधिकृत प्रतिनिधियों द्वारा हस्ताक्षरित किया गया। इस अवसर पर आरएनटीयू की कुलसचिव डॉ. संगीता जौहरी भी उपस्थित रहीं। एमओयू के अंतर्गत दोनों विश्वविद्यालय शिक्षा, शोध एवं नवाचार, संयुक्त शोध परियोजनाओं, छात्र एवं संकाय आदान-प्रदान, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों तथा पाठ्यक्रम विकास के क्षेत्र में परस्पर सहयोग करेंगे। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि यह साझेदारी ज्ञान, अनुभव एवं संसाधनों के आदान-प्रदान को सशक्त बनाते हुए विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के लिए नए अवसर सृजित करेगी। वहीं, प्रो. रवि प्रकाश दुबे ने विश्वास व्यक्त किया कि



यह सहयोग दोनों संस्थानों की शैक्षणिक एवं अनुसंधान क्षमता को नई दिशा प्रदान करेगा तथा नवाचार एवं उत्कृष्ट अकादमिक वातावरण को बढ़ावा देगा। इस अवसर पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. संतोष चौबे को स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। उन्होंने इस शैक्षणिक साझेदारी का स्वागत करते हुए इसे ज्ञान, अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में दीर्घकालिक एवं परिणामोन्मुखी सहयोग की महत्वपूर्ण पहल बताया।

‘उच्च शिक्षा आपके द्वार’ अभियान : नेपाल तक पहुंची यूओयू की शैक्षणिक पहल

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा ‘उच्च शिक्षा आपके द्वार’ अभियान के अंतर्गत 17 से 21 अगस्त 2026 तक नेपाल के महेन्द्रनगर, कंचनपुर में व्यापक प्रचार-प्रसार एवं संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभियान का उद्देश्य नेपाल के विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों, प्रवेश प्रक्रिया तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के अवसरों से परिचित कराना रहा। अभियान के दौरान टीम ने सुदूरपश्चिम विश्वविद्यालय, विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों तथा अन्य संस्थानों में विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों से संवाद किया। प्रवेश प्रक्रिया, पाठ्यक्रम, परीक्षा व्यवस्था, अध्ययन केंद्र तथा Multiple Entry-Multiple Exit सहित विभिन्न शैक्षणिक पहलुओं की जानकारी साझा की गई।

विभिन्न संस्थानों में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों से संवाद हुआ, जिसमें लिटिल बुद्ध सीनियर सेकेंडरी विद्यालय में 500 से अधिक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों तथा अन्य संस्थानों से भी सैकड़ों विद्यार्थियों ने सहभागिता की। अभियान का एक प्रमुख आकर्षण शुक्लाफाटा एफ.एम. सामुदायिक रेडियो पर विश्वविद्यालय की सामुदायिक रेडियो आरजे लता के.सी. का लाइव टॉक रहा, जिसके माध्यम से विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों एवं अवसरों की जानकारी व्यापक श्रोता वर्ग तक पहुंची। कार्यक्रम को करीब 55 हजार श्रोताओं ने सुना। अभियान के दौरान होटल ओपेरा, महेन्द्रनगर में प्रेस कांफ्रेंस भी आयोजित की गई, जिसे



कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने ऑनलाइन संबोधित किया। अभियान के प्रथम दिन नेपाल रवाना होने से पूर्व टीम ने सितारगंज एवं खटीमा स्थित विश्वविद्यालयीय परीक्षा केंद्रों का औचक निरीक्षण भी किया, जहां परीक्षाएं सुव्यवस्थित रूप से संचालित पाई गई। अभियान में डॉ. सुमित प्रसाद, डॉ. दीप प्रकाश, श्रीमती रेखा बिष्ट एवं श्रीमती लता के.सी. ने सक्रिय सहभागिता की। इस पहल से नेपाल में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की शैक्षणिक पहुंच का विस्तार हुआ तथा भारत-नेपाल के बीच शिक्षा के क्षेत्र में संवाद एवं सहयोग को नई दिशा मिली।

उच्च शिक्षा से जुड़ेंगे कैदी, सितारगंज कारागार में खुला विशेष अध्ययन केंद्र

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए केंद्रीय कारागार, सितारगंज में कैदियों के लिए विशेष अध्ययन केंद्र की स्थापना की। विश्वविद्यालय एवं कारागार प्रशासन के मध्य हुए अनुबंध के तहत स्थापित इस केंद्र के माध्यम से कैदियों को विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों में निःशुल्क प्रवेश प्रदान किया जाएगा, जिससे वे कारागार में रहते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही विश्वविद्यालय ने कारागार पुस्तकालय के लिए विभिन्न विषयों की लगभग 280 पुस्तकें भी भेंट कीं।



इस अवसर पर कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि विश्वविद्यालय प्रदेश के सुदूर एवं वंचित वर्गों तक उच्च शिक्षा पहुँचाने के लिए निरंतर प्रयासरत है और यह पहल कैदियों के पुनर्वास तथा उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डेय ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इस पहल को शिक्षा की सर्वसुलभता का सशक्त उदाहरण बताया। प्रो. एम.एम. जोशी ने विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी दी, जबकि कुलसचिव खेमराज भट्ट ने विश्वविद्यालय की समावेशी शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई।

केंद्रीय कारागार के वरिष्ठ अधीक्षक अनुराग मलिक ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे कैदियों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने वाला प्रयास बताया। कार्यक्रम का संचालन सहायक क्षेत्रीय निदेशक रेखा बिष्ट ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव खेमराज भट्ट, उपनिदेशक प्रो. एम.एम. जोशी, विश्वविद्यालय एवं कारागार प्रशासन के अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान बंदियों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने को लेकर विशेष उत्साह एवं आशा का वातावरण देखने को मिला।

छात्र हित में बड़ी पहल, प्रवेश शुल्क पर अतिरिक्त भुगतान हुआ समाप्त

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने शिक्षार्थियों को बड़ी राहत प्रदान करते हुए ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया में प्रवेश शुल्क पर लगाने वाले अतिरिक्त भुगतान (कन्वीनियंस/पेमेंट चार्ज) को समाप्त कर दिया। विश्वविद्यालय एवं पंजाब नेशनल बैंक (रेलवे बाजार शाखा, हल्द्वानी) के संयुक्त प्रयास से शुरू की गई इस सुविधा के अंतर्गत अब विद्यार्थी क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग, यूपीआई सहित विभिन्न डिजिटल माध्यमों से बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के प्रवेश शुल्क जमा कर सकेंगे। बैंक के तकनीकी सहयोगी PAYU द्वारा विकसित नए भुगतान गेटवे के माध्यम से प्रारंभिक चरण में दो लाख रुपये से अधिक की प्रवेश शुल्क राशि सफलतापूर्वक संग्रहित की गई। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि विश्वविद्यालय सदैव छात्र हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। उन्होंने बताया कि शिक्षार्थियों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ को समाप्त करने के उद्देश्य से यह पहल की गई है, जिससे विश्वविद्यालय की पारदर्शी, सरल एवं छात्र-केंद्रित डिजिटल व्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी। प्रवेश प्रभारी डॉ. सुमित प्रसाद ने बताया कि ग्रीष्मकालीन प्रवेश सत्र में 9,500 से अधिक विद्यार्थी प्रवेश ले चुके हैं तथा भविष्य में परीक्षा संबंधी शुल्कों का भुगतान भी इसी गेटवे से कराया जाएगा।

इस अवसर पर प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डेय ने शिक्षार्थियों के हित में इस पहल की सराहना करते हुए डिजिटल भुगतान प्रणाली को बढ़ावा देने में पंजाब नेशनल बैंक की भूमिका की प्रशंसा की। पंजाब नेशनल बैंक की शाखा प्रबंधक श्रीमती बबीता कांडपाल ने विश्वविद्यालय के साथ भविष्य में भी सहयोग जारी रखने की प्रतिबद्धता व्यक्त की तथा बैंक की ओर से सामुदायिक रेडियो "हैलो हल्द्वानी" को उसकी कार्यक्षमता बढ़ाने हेतु सैमसंग गैलेक्सी S25 स्मार्टफोन भेंट किया। कार्यक्रम के अंत में कुलसचिव खेमराज भट्ट ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए इस सहयोग को शिक्षार्थियों के हित में एक महत्वपूर्ण पहल बताया।



हरेला महोत्सव : हरित उत्तराखण्ड का सामूहिक संकल्प

उत्तराखण्ड की समृद्ध लोक परम्परा, प्रकृति संरक्षण एवं हरित विकास के प्रतीक हरेला महोत्सव के अवसर पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी में 14 से 18 जुलाई, 2026 तक पाँच दिवसीय वृहद वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संरक्षण अभियान का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित इस अभियान के अंतर्गत परिसर में लगभग 500 फलदार, औषधीय, छायादार, पुष्पीय एवं स्थानीय प्रजातियों के पौधों का रोपण किया गया। इसके साथ ही फलोद्यान (Fruit Orchard), मियावाकी पद्धति पर आधारित मिश्रित वन (Miyawaki Forest) तथा विश्वविद्यालय पौधालय (Nursery) की स्थापना जैसी दीर्घकालिक पर्यावरणीय पहलों का शुभारम्भ किया गया, जिससे विश्वविद्यालय परिसर को जैव-विविधता सम्पन्न, हरित एवं पर्यावरण-अनुकूल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाये गए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि हरेला केवल एक पारम्परिक पर्व नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति हमारी सामाजिक एवं नैतिक जिम्मेदारियों का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास एवं जन-जागरूकता के प्रति भी समान रूप से प्रतिबद्ध है। उन्होंने सभी शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों से केवल पौधारोपण ही नहीं, बल्कि प्रत्येक पौधे के संरक्षण एवं संवर्धन का भी संकल्प लेने का आह्वान किया। उन्होंने प्रदेशवासियों से अधिकाधिक वृक्षारोपण कर हरेला को जन-आन्दोलन बनाने की अपील की।



पाँच दिवसीय अभियान का शुभारम्भ प्रथम दिवस पर माननीय सांसद श्री अजय भट्ट द्वारा पौधारोपण के साथ हुआ। उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित किए जा रहे फलोद्यान के लिए विभिन्न फलदार पौधों का रोपण करते हुए कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों का समाधान व्यापक जनभागीदारी से ही सम्भव है तथा प्रत्येक नागरिक को वृक्षारोपण एवं पौधों के संरक्षण को अपने सामाजिक दायित्व के रूप में स्वीकार करना चाहिए। द्वितीय दिवस के मुख्य अतिथि कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल के कुलपति प्रो. दीवान सिंह रावत ने विश्वविद्यालय परिसर में पौधारोपण करते हुए कहा कि हरेला उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक चेतना एवं पर्यावरणीय संवेदनशीलता का जीवंत प्रतीक है। उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षण संस्थानों की भूमिका केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज में पर्यावरणीय उत्तरदायित्व एवं सतत विकास की संस्कृति विकसित करना भी उनकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। उन्होंने उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा संचालित इस अभियान की सराहना करते हुए इसे समाज एवं विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण की भावना विकसित करने वाला अनुकरणीय प्रयास बताया। तृतीय दिवस पर सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा के



कुलपति प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट की उपस्थिति में विश्वविद्यालय परिसर में मियावाकी पद्धति से वन स्थापना के उद्देश्य से विशेष पौधारोपण अभियान संचालित किया गया। इस अवसर पर आँवला, तिमिल, सहजन, तेजपात, रीठा सहित विभिन्न स्थानीय एवं बहुउपयोगी प्रजातियों के पौधों का रोपण किया गया। प्रो. बिष्ट ने कहा कि मानसून का समय वैज्ञानिक दृष्टि से वन स्थापना के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है तथा स्थानीय प्रजातियों पर आधारित मियावाकी तकनीक कम समय में सघन एवं समृद्ध वन विकसित करने की प्रभावी पद्धति है। उन्होंने विश्वविद्यालय की इस अभिनव पहल को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सराहनीय प्रयास बताया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं वानिकी एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग के समन्वयक डॉ. एच. सी. जोशी ने बताया कि पूरे सप्ताह विश्वविद्यालय के विभिन्न विद्याशाखाओं, विभागों, शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए परिसर के विभिन्न स्थलों पर पौधारोपण किया। उन्होंने बताया कि अभियान का उद्देश्य केवल वृक्षारोपण तक सीमित न होकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन-जागरूकता, जैव-विविधता संवर्धन, कार्बन अवशोषण तथा भविष्य की पीढ़ियों के लिए हरित एवं स्वच्छ वातावरण का निर्माण करना है। उन्होंने यह भी बताया कि अभियान के लिए पर्यावरणविद् डॉ. आशुतोष पंत द्वारा निःशुल्क पौधे उपलब्ध कराए गए, जो पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनके सतत समर्पण का प्रेरणादायी उदाहरण है।

हरैला महोत्सव का भव्य समापन पाँचवें दिवस क्षेत्रीय विधायक डॉ. मोहन सिंह बिष्ट के मुख्य आतिथ्य तथा जिलाधिकारी नैनीताल श्री ललित मोहन रयाल की विशिष्ट उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित पौधालय (Nursery) का लोकार्पण किया गया, जो भविष्य में गुणवत्तापूर्ण पौध सामग्री उपलब्ध कराने, पौध संरक्षण तथा पर्यावरणीय शिक्षा के एक महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित किया जाएगा। समारोह के दौरान विश्वविद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका 'उड़ान' के नवीन अंक का भी विधिवत विमोचन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. मोहन सिंह बिष्ट ने

कहा कि हरैला उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक पहचान के साथ-साथ प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण का जन-आन्दोलन है तथा प्रत्येक नागरिक को प्रतिवर्ष कम-से-कम एक पौधा लगाकर उसके संरक्षण का संकल्प लेना चाहिए। विशिष्ट अतिथि जिलाधिकारी श्री ललित मोहन रयाल ने कहा कि वृक्षारोपण तभी सार्थक होगा, जब पौधों का नियमित संरक्षण एवं संवर्धन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित पौधालय की सराहना करते हुए इसे पर्यावरण संरक्षण एवं जन-जागरूकता की दिशा में महत्वपूर्ण पहल बताया। पाँच दिवसीय हरैला महोत्सव के दौरान विश्वविद्यालय परिसर में पर्यावरण संरक्षण, हरित विकास एवं जैव-



विविधता संवर्धन को केन्द्र में रखकर संचालित इस व्यापक अभियान में विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी, विद्यार्थी तथा बड़ी संख्या में पर्यावरण प्रेमियों ने सक्रिय सहभागिता की। सभी प्रतिभागियों ने सामूहिक रूप से "एक पौधा-एक जिम्मेदारी" का संकल्प लेते हुए पौधों के संरक्षण एवं हरित उत्तराखण्ड के निर्माण में सक्रिय योगदान देने का संकल्प लिया। यह पाँच दिवसीय अभियान उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा हरित परिसर निर्माण के प्रति प्रतिबद्धता का सशक्त उदाहरण सिद्ध हुआ। वृक्षारोपण, फलोद्यान, मियावाकी वन एवं पौधालय की स्थापना जैसी दीर्घकालिक पहलों के माध्यम से विश्वविद्यालय ने न केवल परिसर में हरित आवरण बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है, बल्कि विद्यार्थियों एवं समाज के लिए प्रकृति संरक्षण का एक जीवंत शिक्षण एवं प्रेरणा केन्द्र विकसित करने की दिशा में भी एक नई पहल की है।

‘वन्दे मातरम्’ के 150 वर्ष: राष्ट्रचेतना, रचनात्मकता और युवा सहभागिता का उत्सव

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय गीत ‘वन्दे मातरम्’ के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 7 से 15 अगस्त 2026 तक विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं जागरूकता कार्यक्रमों की शृंखला आयोजित की गई। इस पहल का उद्देश्य शिक्षार्थियों एवं विश्वविद्यालय परिवार को ‘वन्दे मातरम्’ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय महत्व से परिचित कराने के साथ राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकता और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता को सुदृढ़ करना था।

कार्यक्रमों की शुरुआत 7 अगस्त को ‘वन्दे मातरम्’ के सामूहिक गायन से हुई, जिसमें 150 से अधिक शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी शामिल हुए। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने ‘वन्दे मातरम्’ को स्वतंत्रता चेतना, त्याग, आत्मगौरव और मातृभूमि के प्रति समर्पण का सशक्त प्रतीक बताते हुए विश्वविद्यालय परिवार से राष्ट्रीय मूल्यों से जुड़े कार्यक्रमों में सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया। निदेशक अकादमिक प्रो. पी. डी. पंत ने भी राष्ट्रप्रेम एवं भारतीय संस्कृति के मूल्यों को जीवन में आत्मसात करने पर बल दिया।



आयोजन शृंखला के अंतर्गत सामान्य ज्ञान एवं क्विज प्रतियोगिताओं के माध्यम से ‘वन्दे मातरम्’ के इतिहास और स्वतंत्रता आंदोलन में इसकी भूमिका से संबंधित जानकारी को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया। निबंध लेखन प्रतियोगिता में शिक्षार्थियों ने राष्ट्रीय गीत और राष्ट्रचेतना से जुड़े अपने विचार व्यक्त किए, जबकि गायन प्रतियोगिता में देशभक्ति की भावना को सांगीतिक अभिव्यक्ति दी गई। चित्रकला एवं मेहंदी प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने ‘वन्दे मातरम्’, राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता और भारतीय संस्कृति से प्रेरित रचनात्मक प्रस्तुतियाँ दीं।

विशेष रूप से मेहंदी प्रतियोगिता में शिक्षार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने आकर्षक एवं मौलिक डिजाइनों के माध्यम से अपनी कलात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। विभिन्न गतिविधियों ने विश्वविद्यालय परिसर में राष्ट्रप्रेम, सांस्कृतिक चेतना और रचनात्मक सहभागिता का वातावरण निर्मित किया। शिक्षार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने आयोजन को सामूहिक राष्ट्रीय स्मरण और अभिव्यक्ति का रूप दिया। उत्कृष्ट प्रतिभागियों को 15 अगस्त को प्रशस्ति-पत्र एवं पुरस्कार प्रदान किए गए।



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में 80 वां स्वतंत्रता दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी में 15 अगस्त 2026 को 80वां स्वतंत्रता दिवस देशभक्ति, उत्साह एवं गरिमापूर्ण वातावरण में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण एवं राष्ट्रगान से हुआ। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने स्वतंत्रता सेनानियों को नमन करते हुए स्वतंत्रता के साथ नागरिक दायित्वों को समझने और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रगति, नए शैक्षणिक सहयोगों एवं 21वें वर्ष में प्रवेश का भी उल्लेख किया। समारोह के दौरान हरित परिसर के संकल्प के साथ वृक्षारोपण किया गया। बहुउद्देशीय सभागार में विश्वविद्यालय के कुलगीत, वन्दे मातरम्, देशभक्ति गीतों एवं योग विभाग के शिक्षार्थियों की प्रस्तुतियों सहित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कुलपति ने विश्वविद्यालय की पत्रिका 'उड़ान' एवं न्यूजलेटर का विमोचन किया। समाज कार्य विभाग की ओर से शपथ ग्रहण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों ने सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति प्रतिबद्धता व्यक्त की। समारोह में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं शिक्षार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शशांक शुक्ल एवं डॉ. अनिल कार्की ने किया।

‘सूचना, संवाद और समाधान’ : यूओयू में प्रथम जन संवाद कार्यक्रम

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने शिक्षार्थियों एवं हितधारकों के साथ पारदर्शी, सहभागी और त्वरित संवाद को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 'सूचना, संवाद और समाधान' की थीम पर प्रथम जन संवाद कार्यक्रम आयोजित किया। 'शिक्षा, अवसर और विश्वास—मिलकर करें उत्कृष्ट विश्वविद्यालय का निर्माण' विषय पर आयोजित कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से हुआ तथा @UOULive के Facebook, Instagram एवं YouTube पर लाइव प्रसारित किया गया। विश्वविद्यालय के सामुदायिक रेडियो 'हैलो हल्द्वानी 91.2 FM' ने भी कार्यक्रम के संचालन एवं प्रसारण में सहभागिता की। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने उद्घाटन संबोधन में विश्वविद्यालय की विभिन्न सेवाओं एवं कार्यप्रणाली की जानकारी साझा करते हुए जन संवाद को शिक्षार्थियों के साथ खुले और भरोसेमंद संवाद का प्रभावी माध्यम बताया। कार्यक्रम में प्रवेश अनुभाग से डॉ. सुमित प्रसाद, क्षेत्रीय सेवा निदेशालय से प्रो. एम.एम. जोशी, अध्ययन सामग्री एवं अकादमिक निदेशालय से प्रो. पी.डी. पंत, परीक्षा अनुभाग से प्रो. सोमेश कुमार, शोध अनुभाग से प्रो. मंजरी अग्रवाल, प्लेसमेंट सेल से डॉ. अखिलेश सिंह तथा पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा से प्रो. राकेश चन्द्र रयाल ने अपने-अपने विभागों की सेवाओं एवं शिक्षार्थियों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां साझा कीं। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण जन संवाद एवं प्रश्नोत्तर सत्र रहा, जिसमें 'हैलो हल्द्वानी' के

श्री अनिल नैलवाल एवं श्रीमती सोनू भट्ट ने शिक्षार्थियों के 27 से अधिक प्रश्न विशेषज्ञ पैनल के समक्ष रखे। प्रश्न प्रवेश एवं लेटरल एंट्री, परीक्षा, पूर्व वर्षों के प्रश्न-पत्र, अध्ययन केन्द्र, अध्ययन सामग्री, प्लेसमेंट, शैक्षणिक कक्षाओं, शोध, नवीन पाठ्यक्रम एवं भुगतान संबंधी विषयों से जुड़े थे। नेपाल के शिक्षार्थियों की प्रवेश एवं शोध संबंधी जिज्ञासाओं का भी समाधान किया गया। विशेषज्ञों ने शिक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की वेबसाइट, FAQ तथा 'Student One View' पोर्टल का नियमित उपयोग करने की सलाह दी। कार्यक्रम के तकनीकी एवं मीडिया संचालन में विश्वविद्यालय की ICT एवं मीडिया टीम का महत्वपूर्ण योगदान रहा। तीन चरणों में प्रस्तावित इस जन संवाद श्रृंखला के आगामी दो चरण भी आयोजित किए जाएंगे।



सूचना, संवाद और समाधान: यूओयू के जन संवाद कार्यक्रम का दूसरा चरण संपन्न

शिक्षार्थियों एवं हितधारकों के साथ पारदर्शी और सहभागी संवाद को सुदृढ़ करने की दिशा में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा 18 सितम्बर 2026 को 'जन संवाद कार्यक्रम भाग-2' के द्वितीय चरण का ऑनलाइन आयोजन किया गया। जूम पर आयोजित इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण विश्वविद्यालय के फेसबुक, इंस्टाग्राम एवं यूट्यूब मंचों पर @UOULive के माध्यम से किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के सामुदायिक रेडियो 'हैलो हल्द्वानी 91.2 एफ.एम.' की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

'सूचना, संवाद और समाधान' की अवधारणा पर आधारित इस कार्यक्रम की थीम 'शिक्षा, अवसर और विश्वास: मिलकर करें उत्कृष्ट विश्वविद्यालय का निर्माण' रही। तीन चरणों में प्रस्तावित इस श्रृंखला का उद्देश्य शिक्षार्थियों को विश्वविद्यालय की सेवाओं से अवगत कराना तथा उनकी समस्याओं एवं सुझावों को सीधे संबंधित अधिकारियों तक पहुँचाना है। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने शिक्षार्थियों के साथ निरंतर संवाद बनाए रखने और उनकी आवश्यकताओं को समझकर समाधान उपलब्ध कराने में ऐसे मंचों के महत्व को रेखांकित किया। कार्यक्रम में CIQA से प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे, अकादमिक निदेशालय एवं अध्ययन सामग्री निर्माण एवं वितरण से प्रो. पी.डी. पंत, परीक्षा अनुभाग से प्रो. सोमेश कुमार, प्रवेश अनुभाग से डॉ. सुमित प्रसाद, शोध अनुभाग से प्रो. मंजरी अग्रवाल, प्लेसमेंट सेल से डॉ. अखिलेश सिंह तथा पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा से प्रो. राकेश चन्द्र रयाल ने अपने-अपने विभागों की प्रक्रियाओं एवं



सेवाओं की सरल एवं स्पष्ट जानकारी दी। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण प्रश्नोत्तर सत्र रहा, जिसका संचालन 'हैलो हल्द्वानी' से श्री अनिल नैलवाल एवं श्रीमती सोनू भट्ट ने किया। वीडियो संदेश, ई-मेल एवं लाइव चैट के माध्यम से प्राप्त 30 से अधिक प्रश्न विशेषज्ञ पैनल के समक्ष रखे गए। ये प्रश्न प्रवेश प्रक्रिया, अध्ययन केंद्रों की सुविधाओं, पाठ्य सामग्री वितरण, विवरण संशोधन, डी.ई.बी. आई.डी., परीक्षा शहर

परिवर्तन, शुल्क वापसी, प्लेसमेंट एवं छात्रवृत्ति जैसे विषयों से संबंधित थे। नेपाल के शिक्षार्थियों ने भी डिग्री की समकक्षता एवं प्रवेश संबंधी प्रश्न पूछे। विशेषज्ञों ने शिक्षार्थियों को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करते हुए विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.uou.ac.in नियमित रूप से देखने, 'Student One View' पोर्टल का लाभ उठाने तथा आवश्यकता पड़ने पर संबंधित विद्याशाखा या विभाग से आधिकारिक ई-मेल के माध्यम से संपर्क करने की सलाह दी। अंत में डॉ. सुमित प्रसाद ने आई.सी.टी. एवं मीडिया टीम के योगदान की सराहना करते हुए सभी विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया।



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में गुणवत्ता, नवाचार एवं संस्थागत विकास पर CIQA की चतुर्थ बैठक आयोजित

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन केन्द्र (CIQA) की चतुर्थ बैठक कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय मुख्यालय में आयोजित की गई। बैठक में गुणवत्ता संवर्धन, शैक्षणिक उत्कृष्टता, प्रशासनिक दक्षता, राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020), NAAC मानकों के अनुरूप संस्थागत विकास तथा आगामी कार्ययोजना से जुड़े विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा करते हुए महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। बैठक के दौरान कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी के एक वर्ष के सफल कार्यकाल (24 जुलाई 2025–24 जुलाई 2026) की उपलब्धियों पर आधारित विशेष वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया तथा 'प्रगति, परिवर्तन और नई ऊँचाइयाँ' शीर्षक से विश्वविद्यालय की प्रगति आख्या का लोकार्पण एवं प्रस्तुतीकरण किया गया। साथ ही बीते एक वर्ष में विश्वविद्यालय की उपलब्धियों को राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय प्रिंट मीडिया में प्राप्त व्यापक स्थान का भी प्रदर्शन किया गया।



प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे, निदेशक, अनुसंधान एवं CIQA, ने विश्वविद्यालय की विकास यात्रा का उल्लेख करते हुए गुणवत्ता आश्वासन एवं आगामी NAAC मूल्यांकन में सभी हितधारकों की सक्रिय सहभागिता पर बल दिया। वहीं प्रो. गगन सिंह, अपर निदेशक, CIQA, ने गत एक वर्ष में गुणवत्ता सुधार, शिक्षक विकास, संस्थागत नीतियों एवं प्रक्रियाओं के क्रियान्वयन तथा विश्वविद्यालय की प्रमुख उपलब्धियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। विशेष सत्र में इग्नू, नई दिल्ली के CIQA निदेशक प्रो. विजय कुमार तथा चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के पूर्व प्रति-कुलपति प्रो. मृदुल कुमार

गुप्ता ने गुणवत्ता आश्वासन, संस्थागत विकास, डिजिटल शिक्षा, शोध, नवाचार तथा NAAC मूल्यांकन से संबंधित महत्वपूर्ण सुझाव साझा किए। विशेषज्ञों ने विश्वविद्यालय द्वारा गुणवत्ता सुधार, MOOCs के शुभारम्भ तथा संस्थागत विकास की दिशा में किए गए प्रयासों की सराहना की। बैठक में वर्ष 2025–26 की कार्ययोजना की समीक्षा तथा 2026–27 की प्रस्तावित कार्ययोजना, AQAR एवं NAAC के नवीन दिशा-निर्देश, आईटी अवसंरचना के सुदृढीकरण, परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली के आधुनिकीकरण, शोध गतिविधियों के विस्तार तथा विभिन्न विश्वविद्यालयी नीतियों के पुनरावलोकन पर भी विचार-विमर्श

किया गया। अपने संबोधन में कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि बीते एक वर्ष की उपलब्धियाँ विश्वविद्यालय परिवार के सभी शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, अध्ययन केन्द्रों एवं विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयासों का परिणाम हैं। उन्होंने आगामी वर्षों में गुणवत्ता आश्वासन, डिजिटल परिवर्तन, शोध एवं नवाचार, कौशल विकास, अंतरराष्ट्रीय सहयोग तथा छात्र सहायता सेवाओं के विस्तार को विश्वविद्यालय की प्रमुख प्राथमिकताएँ बताते हुए सभी हितधारकों से इसी समर्पण के साथ संस्थागत विकास में सहभागी बनने का आह्वान किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शशांक शुक्ल ने किया।



शोध में नवाचार और सामाजिक प्रासंगिकता पर जोर

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के निदेशालय शोध एवं नवाचार द्वारा 18-19 अगस्त 2026 को दो दिवसीय शोध कार्यशाला एवं पीएच.डी. शोधार्थियों की छः माह की प्रगति समीक्षा आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्देश्य शोध की गुणवत्ता एवं सामाजिक प्रासंगिकता को बढ़ावा देने, शोधार्थियों को राष्ट्रीय एवं वैश्विक शोध प्रवृत्तियों से परिचित कराने तथा अंतर्विषयक एवं नवाचारी शोध को प्रोत्साहित करना रहा।



कार्यशाला के प्रथम दिन महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के पूर्व कुलपति प्रो. संजीव शर्मा ने सामाजिक विज्ञान अनुसंधान में शोध की गंभीरता और शोधार्थियों की जिम्मेदारी पर बल दिया। उद्यमी एवं समाजसेवी श्री द्वारिका प्रसाद रतूड़ी ने 'Cross-Cultural Entrepreneurship and Global Strategy' पर बोलते हुए अनुशासन, तैयारी, व्यावसायिकता और विभिन्न संस्कृतियों से सीखने के महत्व को रेखांकित किया। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने शोध में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रभावी उपयोग तथा शोध परिणामों को जमीनी स्तर पर उपयोगी बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। इंजीनियर नवीन पांगती ने 'Research Design and Systems Approach' के माध्यम से जटिल समस्याओं के समग्र समाधान में सिस्टम्स एप्रोच की भूमिका

समझाई। आईसीएआर के डॉ. जे.सी. भट्ट ने कृषि अनुसंधान में और तकनीक के महत्व पर प्रकाश डालते हुए पर्वतीय कृषि की चुनौतियों के समाधान में मोबाइल तकनीक, एआई एवं मशीन लर्निंग की संभावनाएं बताईं। जी.बी. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवेंद्र कुमार कश्यप ने शोधार्थियों को स्वतंत्र एवं रचनात्मक चिंतन के साथ पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों से जुड़े रहते हुए शोध करने के लिए प्रेरित किया। शोध एवं नवाचार निदेशक प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे ने शोध की गुणवत्ता, प्रभाव एवं सामाजिक उपयोगिता को बढ़ाने के लिए 'शोध प्रोत्साहन' पहल की घोषणा की। कार्यशाला के साथ विभिन्न विषयों के पीएच.डी. शोधार्थियों की छः माह की प्रगति प्रस्तुतियों की समीक्षा भी की गई। वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, कंप्यूटर विज्ञान, हिंदी, अंग्रेजी, गृह विज्ञान, संस्कृत, शिक्षा, पर्यावरण विज्ञान एवं गणित सहित विभिन्न विषयों के शोधार्थियों को विशेषज्ञों एवं पर्यवेक्षकों से अकादमिक सुझाव प्राप्त हुए। दो दिवसीय आयोजन ने शोधार्थियों को विशेषज्ञ संवाद, अकादमिक मार्गदर्शन और अपने शोध कार्य के मूल्यांकन का अवसर प्रदान करते हुए विश्वविद्यालय में अंतर्विषयक, नवाचारी एवं सामाजिक रूप से प्रासंगिक शोध संस्कृति को सुदृढ़ किया।

PNB के CSR सहयोग से यूओयू में कंप्यूटर लैब का उद्घाटन

पंजाब नेशनल बैंक (PNB) के कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) सहयोग से उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की सेंट्रल कंप्यूटर लैब को सुदृढ़ किया गया। इस पहल के तहत बैंक द्वारा कुल 30 कंप्यूटर उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया गया था, जिनमें से प्रथम चरण में 10 कंप्यूटर विश्वविद्यालय को प्रदान किए गए। कंप्यूटर लैब का उद्घाटन विश्वविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में किया गया।



कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने की। उन्होंने PNB के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा कि डिजिटल तकनीक आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है और नई कंप्यूटर सुविधाओं से शिक्षार्थियों को बेहतर डिजिटल लर्निंग सपोर्ट तथा शैक्षणिक एवं प्रशिक्षण गतिविधियों में लाभ मिलेगा। मुख्य अतिथि PNB के महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, देहरादून श्री अनुपम ने शिक्षा एवं तकनीक के माध्यम से शिक्षार्थियों को सशक्त बनाने में संस्थागत सहयोग की भूमिका पर बल दिया।

विशिष्ट अतिथि मंडल प्रमुख, हल्द्वानी श्री सिद्धार्थ अधिकारी ने बैंक की CSR गतिविधियों की जानकारी दी। विश्वविद्यालय के प्रो. जीतेन्द्र पाण्डे ने कहा कि PNB का सहयोग विश्वविद्यालय की डिजिटल अधोसंरचना को मजबूत करने में उपयोगी होगा। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय एवं PNB के अधिकारी, शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

वित्तीय जवाबदेही से हरित पहल तक: यूओयू में विशेषज्ञ व्याख्यान और ईवी चार्जिंग स्टेशन की शुरुआत

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में वित्तीय प्रबंधन, संस्थागत जवाबदेही और सतत विकास से जुड़ी दो महत्वपूर्ण पहलें 21 सितम्बर 2026 को सामने आईं। आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र (CIQA) द्वारा वित्तीय प्रबंधन एवं जवाबदेही पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया, वहीं विश्वविद्यालय परिसर में ईवी चार्जिंग स्टेशन का भी उद्घाटन किया गया। CIQA द्वारा आयोजित 'स्वायत्त सार्वजनिक संस्थानों, विशेषकर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में वित्तीय प्रबंधन एवं जवाबदेही' विषयक विशेष व्याख्यान में भारत के पूर्व उप नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक श्री निरंजन पंत मुख्य वक्ता रहे। कार्यक्रम के उद्घाटन संबोधन में अनुसंधान निदेशालय एवं CIQA के प्रमुख प्रो. गिरिजा पाण्डे ने संस्थागत कार्यप्रणाली और वित्तीय समझ में निरंतर सुधार के लिए विशेषज्ञों के अनुभव से सीखने की आवश्यकता पर जोर दिया। श्री निरंजन पंत ने स्पष्ट किया कि वित्तीय प्रबंधन केवल लेखांकन या बजट बनाने तक सीमित नहीं है। उन्होंने योजना एवं बजट निर्माण, व्यय एवं खरीद प्रक्रिया, परिसंपत्ति प्रबंधन, लेखा व्यवस्था, आंतरिक नियंत्रण, लेखा परीक्षा और संसाधन संकलन को इसके प्रमुख आयाम बताया। उन्होंने कहा कि बजट संस्थान की प्राथमिकताओं और लक्ष्यों के अनुरूप होना चाहिए तथा वित्तीय निर्णयों में वैधानिकता, औचित्य और सक्षम प्राधिकरण की स्वीकृति सुनिश्चित की जानी चाहिए। उन्होंने कार्य निष्पादन आधारित और परिणामोन्मुख बजट व्यवस्था पर भी जोर देते हुए कहा कि संस्थागत वित्तीय प्रबंधन को केवल खर्च की निगरानी तक सीमित न रखकर उसे परिणामों और उपलब्धियों से जोड़ा जाना चाहिए। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के संदर्भ में श्री पंत ने मुक्त विश्वविद्यालयों के विकास और बदलते शैक्षणिक परिवेश पर भी विचार साझा किए। उन्होंने उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को हिमालयी विषयों एवं हिमालय-केंद्रित अध्ययन के विशिष्ट संस्थान के रूप में अपनी पहचान विकसित करने की दिशा में कार्य करने का सुझाव दिया।



कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने व्याख्यान में दिए गए सुझावों को महत्वपूर्ण और विचारोत्तेजक बताते हुए उन्हें संस्थागत स्तर पर लागू करने की दिशा में प्रयास करने की बात कही। कार्यक्रम में प्रो. मंजरी अग्रवाल, प्रो. गिरिजा पाण्डे, श्री खेमराज भट्ट सहित शिक्षक, गैर-शैक्षणिक कर्मचारी और लेखा अनुभाग के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन प्रो. गगन सिंह ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. मंजरी अग्रवाल ने किया। विशेष व्याख्यान के बाद विश्वविद्यालय परिसर में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय और Ezy Charge के सहयोग से स्थापित ईवी चार्जिंग स्टेशन का उद्घाटन किया गया।

इसका उद्देश्य परिसर में विद्युत वाहनों के उपयोग को प्रोत्साहित करने के साथ पर्यावरण-अनुकूल और सतत परिवहन को बढ़ावा देना है। इस अवसर पर Ezy Charge के प्रतिनिधि श्री प्रशांत उपस्थित रहे। चार्जिंग स्टेशन की स्थापना को विश्वविद्यालय की हरित प्रौद्योगिकी, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और सतत विकास की दिशा में एक पहल के रूप में देखा गया।

SWOC विश्लेषण से संस्थागत विकास की नई रूपरेखा

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस (CIQA) के तत्वावधान में विश्वविद्यालय के संस्थागत सुदृढ़ीकरण एवं भावी कार्ययोजना के निर्माण के उद्देश्य से सीडीएस जनरल बिपिन रावत बहुउद्देशीय सभागार में SWOC (Strengths, Weaknesses, Opportunities and Challenges) विश्लेषण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने की। इसमें विश्वविद्यालय की विभिन्न विद्याशाखाओं, विभागों एवं प्रशासनिक इकाइयों के अधिकारियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने सहभागिता करते हुए संस्थागत उपलब्धियों, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तृत विचार-विमर्श किया।



बैठक में विश्वविद्यालय की शक्तियों को सुदृढ़ करने, कमियों के समाधान, नई संभावनाओं के प्रभावी उपयोग तथा भविष्य की चुनौतियों का रणनीतिक ढंग से सामना करने पर चर्चा हुई। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने उच्च शिक्षण संस्थानों के लिए समय-समय पर आत्ममूल्यांकन की आवश्यकता पर बल देते हुए शिक्षा की गुणवत्ता, शोध, नवाचार, छात्र सेवाओं एवं प्रशासनिक दक्षता को और मजबूत बनाने के लिए व्यवहारिक एवं दूरदर्शी सुझाव देने का आह्वान किया। इस अवसर पर निदेशक अकादमिक प्रो. पी.डी. पंत, वित्त नियंत्रक एस.पी. सिंह तथा परीक्षा नियंत्रक प्रो. सोमेश कुमार ने अपने-अपने अनुभागों की उपलब्धियों एवं भावी योजनाओं की जानकारी साझा की बैठक में अकादमिक गुणवत्ता, डिजिटल शिक्षा, शोध, कौशल विकास, उद्योग एवं संस्थागत सहयोग तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन

पर भी सुझाव प्राप्त किए गए। सीआईक्यूए के अतिरिक्त निदेशक प्रो. गगन सिंह ने बताया कि प्राप्त सुझावों के आधार पर विश्वविद्यालय के दीर्घकालिक संस्थागत विकास का रोडमैप तैयार किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन प्रो. जितेन्द्र पाण्डेय ने किया।

स्वच्छ ऊर्जा से सुरक्षित भविष्य की ओर सार्थक पहल

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर इंटरनल क्वालिटी एश्योरेंस (सीआईक्यूए) के तत्वावधान में आयोजित विशेष व्याख्यान में भारत सरकार के पीएम-एसटीआईएसी (PM-STIAC) के सदस्य, पूर्व महानिदेशक डीआरडीओ, पूर्व सदस्य नीति आयोग तथा पद्मश्री एवं पद्मभूषण से सम्मानित प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार सारस्वत ने कहा कि ऊर्जा सुरक्षा और हरित भविष्य के लिए स्वच्छ ऊर्जा को अपनाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। उन्होंने विकसित भारत के निर्माण के लिए ऊर्जा उत्पादन एवं उपभोग में वृद्धि के साथ सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन जैसी स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग तथा पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन पर बल दिया।

"स्वच्छ ऊर्जा के साथ ऊर्जा सुरक्षा : हरित भविष्य की नई दिशा" विषय पर आयोजित इस व्याख्यान की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने की। डॉ. सारस्वत ने विश्वविद्यालय द्वारा ग्रीन कैम्पस, ऊर्जा संरक्षण एवं सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए जलवायु परिवर्तन, नेट-ज़ीरो कार्बन उत्सर्जन और जनभागीदारी आधारित पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. लोहनी ने विश्वविद्यालय की पर्यावरण संरक्षण एवं ऊर्जा दक्षता के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई तथा व्याख्यान को विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों के लिए अत्यंत प्रेरणादायी बताया। व्याख्यान के उपरान्त डॉ. वी.के. सारस्वत ने विश्वविद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में सीआईक्यूए के निदेशक प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे ने



अतिथि का स्वागत किया तथा निदेशक अकादमिक प्रो. पी.डी. पंत ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुचित्रा अवस्थी ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव खेमराज भट्ट, परीक्षा नियंत्रक प्रो. सोमेश कुमार, शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

‘नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत’ अभियान के तहत नशामुक्ति शपथ कार्यक्रम आयोजित

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की एंटी ड्रग सेल द्वारा राज्यपाल सचिवालय, उत्तराखण्ड तथा भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के सहयोग से संचालित ‘नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत’ अभियान के अंतर्गत नशामुक्ति जागरूकता एवं सामूहिक शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 50 से अधिक छात्र-छात्राओं, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने नशामुक्त रहने तथा समाज को इसके दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ‘मन की बात’ कार्यक्रम के सामूहिक श्रवण एवं अवलोकन से हुई। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने युवाओं से नशे जैसी सामाजिक बुराई से दूर रहकर स्वस्थ, जागरूक एवं अनुशासित जीवनशैली अपनाने का आह्वान किया।



एंटी ड्रग सेल के प्रभारी डॉ. भानु प्रकाश जोशी ने नशे के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दुष्प्रभावों पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को योग, खेल और सकारात्मक जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में एंटी ड्रग सेल के सदस्यों तथा योग विभाग के अध्यापकों एवं प्रशिक्षकों ने भी सक्रिय सहभागिता की। अंत में सभी प्रतिभागियों ने नशामुक्त उत्तराखण्ड एवं विकसित भारत के निर्माण में योगदान देने की सामूहिक शपथ ली।

राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस पर पुस्तकालयों की बदलती भूमिका पर कार्यक्रम आयोजित

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विद्यालय द्वारा 12 अगस्त 2026 को पद्मश्री डॉ. एस. आर. रंगनाथन की 134वीं जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने दीप प्रज्ज्वलन एवं डॉ. रंगनाथन के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया। इस अवसर पर पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के क्षेत्र में उनके योगदान को स्मरण किया गया। विद्यालय के निदेशक प्रो. अरविंद भट्ट ने डॉ. रंगनाथन के जीवन एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए पुस्तकालयों को शिक्षा, अनुसंधान, ज्ञान-सृजन एवं बौद्धिक विकास का महत्वपूर्ण केंद्र बताया। कार्यक्रम समन्वयक सुश्री प्रीति शर्मा ने पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका को 'शिक्षकों के शिक्षक' के रूप में रेखांकित किया तथा डॉ. रंगनाथन के योगदान पर अपनी स्वरचित कविता प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के अंतर्गत 'Library Thought Wall – What Do You Think About the Library?' गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं अन्य प्रतिभागियों ने पुस्तकालयों के प्रति अपने विचार और अनुभव साझा किए। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन Library & Information Science Quiz का आयोजन किया गया, जिसमें 80 से अधिक प्रतिभागियों ने सहभागिता की। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे। आयोजन ने पठन संस्कृति, ज्ञान-साझाकरण, अनुसंधान एवं आजीवन अधिगम को बढ़ावा देने में पुस्तकालयों की निरंतर विकसित होती भूमिका को रेखांकित किया।



ढोल-दमाऊ की थाप पर जीवंत हुई लोक विरासत, यूओयू में नई पीढ़ी ने जाना उत्तराखण्ड का सांस्कृतिक वैभव

उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति और पारंपरिक वाद्य परंपराओं की जीवंत झलक 20 सितम्बर 2026 को उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के सी.डी.एस. जनरल बिपिन रावत बहुउद्देशीय सभागार में देखने को मिली। 'अपनी धरोहर न्यास' के तत्वावधान में आयोजित ढोल-दमाऊ कार्यशाला में पारंपरिक वाद्यों की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्ता, उनके विविध प्रयोग और लोकजीवन से उनके संबंध को प्रस्तुतियों के माध्यम से समझाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ढोल-दमाऊ की पारंपरिक थाप, दीप प्रज्ज्वलन और शगुन आखर के साथ हुआ। उद्घाटन संबोधन कुमाऊँनी भाषा में श्रीमती शांति जीना ने दिया। उन्होंने 'अपनी धरोहर' संस्था के कार्यों और सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयासों की जानकारी देते हुए कहा कि संस्कृति के संरक्षण की शुरुआत स्वयं से होती है और अपनी जड़ों को समझना तथा अगली पीढ़ी तक पहुंचाना सामूहिक जिम्मेदारी है। संस्था पर आधारित एक वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया।



कार्यक्रम में यूओयू के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी, यू-कॉस्ट के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पंत, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह प्रान्त प्रचारक श्री चन्द्रशेखर, डॉ. सोहन लाल, श्री मोहन लाल, श्रीमती सुनीता जोशी एवं श्रीमती शांति जीना सहित अनेक अतिथि उपस्थित रहे। डॉ. सोहन लाल और उनकी टीम ने गणेश वंदना से ढोल-दमाऊ की प्रस्तुति की। कलाकारों ने विभिन्न तालों और प्रहारों के सांकेतिक महत्व को समझाते हुए बताया कि इन वाद्यों के माध्यम से उत्तराखण्ड में पर्वों, अनुष्ठानों और विभिन्न भावनाओं की अभिव्यक्ति की जाती रही है। इसके बाद श्री मोहन लाल और उनकी टीम ने कुमाऊँनी संस्कृति में ढोल-दमाऊ के विविध प्रयोगों को प्रस्तुत किया। प्रस्तुति की खास बात यह रही कि इसमें उनके

आठ वर्षीय पौत्र हितेश कुमार ने भी भाग लिया, जिसने लोक परंपरा के पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण का संदेश दिया। यू-कॉस्ट के महानिदेशक प्रो. दुर्गेश पंत ने ऐसे आयोजनों को सांस्कृतिक चेतना के पुनर्जागरण के लिए महत्वपूर्ण बताया और इन्हें नियमित रूप से आयोजित किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। वहीं श्री चन्द्रशेखर ने भारत और उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक विविधता का उल्लेख करते हुए युवा पीढ़ी को अपनी लोक संस्कृति और विरासत से जोड़ने की आवश्यकता रेखांकित की। कार्यक्रम में सुन्दर दास एवं उनकी टीम ने पारंपरिक वाद्य हुड़का की प्रस्तुति दी और उसके सांस्कृतिक महत्व तथा विभिन्न अनुष्ठानों में इसके प्रयोग की जानकारी दी। इस प्रस्तुति के माध्यम से उत्तराखण्ड की लोक संगीत परंपरा में पारंपरिक वाद्यों की विविधता भी सामने आई।

कार्यक्रम के दौरान उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की विकास यात्रा पर आधारित एक वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के विस्तार, क्षेत्रीय अध्ययन केंद्रों में हुए विकास, प्रवेश संख्या में वृद्धि और समग्र प्रगति को दर्शाया गया। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने कलाकारों की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय के शुभ अवसरों और विभिन्न आयोजनों में उत्तराखण्ड की लोक संगीत परंपरा को स्थान देने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने भविष्य में भी ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाने की बात कही और सभी से इनमें सहभागी बनने का आह्वान किया। समारोह में 'बैणी सेना', 'साथी' सहित विभिन्न संगठनों एवं सांस्कृतिक संस्थाओं को उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। बड़ी संख्या में स्थानीय निवासी, संस्कृति प्रेमी और लोक कला के प्रशंसक भी कार्यक्रम में शामिल हुए। कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन प्रो. राकेश चन्द्र रयाल ने किया। आयोजन में न्यास के अध्यक्ष विजय भट्ट, सर्व व्यवस्था प्रमुख श्री कृष्ण चन्द्र बेलवाल, व्यवस्था प्रमुख श्री गोपाल सिंह पटवाल सहित आयोजन टीम का सहयोग रहा। कार्यक्रम ने विश्वविद्यालय परिसर को लोक संस्कृति, पीढ़ियों के बीच सांस्कृतिक संवाद और पारंपरिक विरासत के संरक्षण के एक जीवंत मंच के रूप में सामने रखा।



यूओयू में हिमालय दिवस समारोह का आयोजन

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के विज्ञान ब्लॉक में 9 सितम्बर 2024 को हिमालय दिवस के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें विशेषज्ञों एवं शिक्षकों ने हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण, जैव विविधता, संसाधन प्रबंधन तथा सतत विकास पर विचार साझा किए। उद्घाटन संबोधन में निदेशक अकादमिक प्रो. पी.डी. पंत ने हिमालय को 'एशिया का जल स्तंभ' बताते हुए कहा कि इसकी प्रकृति, पारिस्थितिकी एवं संवेदनशीलता को समझे बिना विकास की प्रभावी योजना संभव नहीं है। उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के लिए हिमालय को संरक्षित रखना सामूहिक जिम्मेदारी बताया।



मुख्य अतिथि डॉ. शेर सिंह सामंत ने 'हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण एवं प्रबंधन की आवश्यकता' विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया। उन्होंने जैव विविधता की समझ को सफल संरक्षण की आधारशिला बताते हुए व्यवस्थित एवं दीर्घकालिक अध्ययन पर बल दिया। हिमालय के समक्ष प्रमुख खतरों की चर्चा करते हुए उन्होंने एक्स-सीटू संरक्षण, पीपुल्स बायोडायवर्सिटी रजिस्टर, इकोलॉजिकल निश मॉडलिंग तथा आर्बोरेटम जैसे संरक्षण मॉडलों के उदाहरण प्रस्तुत किए और दीर्घकालिक पारिस्थितिक निगरानी, संरक्षण शिक्षा, सिटीजन साइंस एवं स्थानीय समुदायों की भागीदारी को आवश्यक बताया। अनुसंधान निदेशालय के प्रमुख प्रो. गिरिजा पाण्डे ने बढ़ती जलवायु आपदाओं

की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए पर्यावरणीय खतरों के विश्लेषण को नीति निर्माण का अभिन्न अंग बनाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि शहरी-औद्योगिक विकास और ग्रामीण विकास में समन्वय के अभाव से 'प्रचुरता के बीच गरीबी' जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं, अतः संसाधनों का विवेकपूर्ण एवं सतत प्रबंधन अनिवार्य है। धन्यवाद ज्ञापन में विश्वविद्यालय के कुलसचिव ने कहा कि "हम हिमालय का हिस्सा हैं और हिमालय हमारे अस्तित्व का आधार है।" उन्होंने हिमालय के संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयासों का आह्वान किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. बीना तिवारी फुलारा एवं डॉ. प्रीति पंत ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के शिक्षक, शोधार्थी एवं अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

हिंदी पखवाड़ा-2026 समारोह सम्पन्न

तकनीकी युग में हिंदी के सतत विकास को अपनाने पर जोर

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग के तत्वावधान में आयोजित हिंदी पखवाड़ा-2026 का समापन समारोह 19 सितम्बर को संपन्न हुआ। समारोह का विषय “पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता तक” था। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति एवं संरक्षक प्रो. नवीन चंद्र लोहनी जी, मुख्य अतिथि प्रो. दिवा भट्ट, मुख्य वक्ता डॉ. विजया सती सहित विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। स्वागत संबोधन में मानविकी विद्याशाखा के निदेशक प्रो. गिरिजा पाण्डे ने कहा कि जिस प्रकार वैश्विक स्तर पर अंग्रेज़ी संपर्क और अवसरों की भाषा है, उसी प्रकार देश के भीतर हिंदी व्यापक संपर्क भाषा की भूमिका निभाती है। कार्यक्रम प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए डॉ. शशांक शुक्ल ने कहा कि बाज़ार, मशीन और तकनीक की कसौटी पर खरी उतरने वाली भाषा ही भविष्य में टिकेगी, अतः हिंदी को तकनीकी परिवेश के अनुरूप तैयार करना होगा।

मुख्य वक्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ. विजया सती ने हंगरी (बुडापेस्ट) में हिंदी की विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने विदेशों में हिंदी के अध्ययन-अध्यापन, प्रवासी हिंदी साहित्य तथा वैश्विक स्तर पर हिंदी के लिए कार्यरत विद्वानों का स्मरण करते हुए हिंदी की वैश्विक उपस्थिति के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि प्रो. दिवा भट्ट ने भारतीय भाषाओं और हिंदी के अंतर्संबंधों पर विचार रखते हुए कहा कि "हिंदी भाषा एक सतरंगी छाता है, जिसके अंदर समस्त भारतीय भाषाएँ हैं।" उन्होंने भाषायी विविधता को समझने की आवश्यकता पर बल दिया। समारोह को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी जी ने तकनीकी युग में हिंदी के सतत विकास तथा आधुनिक तकनीक के साथ हिंदी के निरंतर



विस्तार की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि तकनीकी रूप से तेजी से बदलते वर्तमान समय में हिंदी भाषा का विकास भी सतत रूप से होना चाहिए। हिंदी को वैश्विक और आधुनिक मंचों पर अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए भाषा के विकास में नए-नए तकनीकी अनुप्रयोगों को शामिल किए जाने की आवश्यकता है। डॉ. अनिल कार्की ने पखवाड़े के दौरान आयोजित गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विजयी प्रतिभागियों को पुस्तकें एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया। निबंध प्रतियोगिता में कृतिका त्रिवेदी, शाने अली एवं डॉ. रुचि पाण्डे; व्याकरण प्रतियोगिता में डॉ. मीतु भट्ट, कमलेश पथनी एवं हेम छिमवाल; तथा स्लोगन प्रतियोगिता में रेनू भट्ट, कृतिका त्रिवेदी एवं स्वाति उपाध्याय को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. पुष्पा बुढलाकोटी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. राजेंद्र कैड़ा ने प्रस्तुत किया। समारोह में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

यूओयू में शिक्षक सम्मान समारोह-2026 का आयोजन

शिक्षक दिवस के अवसर पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में ‘शिक्षक सम्मान समारोह-2026’ का आयोजन विश्वविद्यालय के सी.डी.एस. जनरल बिपिन रावत बहुउद्देशीय सभागार में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ निदेशक अकादमिक प्रो. पी.डी. पंत के उद्घाटन संबोधन से हुआ। उन्होंने उपस्थित सभी शिक्षकों एवं कर्मचारियों को शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं तथा शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. शेर सिंह सामंत, वरिष्ठ वैज्ञानिक, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय एन.एस.ए.आई. तथा एच.एफ.आर.आई. के पूर्व निदेशक, का विज्ञान एवं हिमालयी अध्ययन के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए स्वागत एवं सम्मान किया गया। इसके पश्चात उन्होंने अपने संबोधन में शिक्षा, अनुसंधान एवं ज्ञान के महत्व पर विचार व्यक्त किए। डॉ. सामंत ने भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं महान शिक्षाविद् डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए ‘विद्यार्थियों के करियर एवं ज्ञान निर्माण में शिक्षकों की भूमिका’ विषय पर प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान नहीं करते हैं, बल्कि विद्यार्थियों के जीवन में नैतिक मार्गदर्शक की भूमिका भी निभाते हैं। राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों की भूमिका को



महत्वपूर्ण बताते हुए उन्होंने कहा कि प्रोत्साहन, सहयोग, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा देना भी शिक्षक के दायित्वों का अभिन्न हिस्सा है। उन्होंने अपने शैक्षणिक एवं व्यावसायिक जीवन की यात्रा के अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अनेक प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत किए। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने शिक्षक दिवस के अवसर पर सभी शिक्षकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि एक शिक्षक अपने जीवनकाल में अनेक भूमिकाओं का निर्वहन करता है और प्रत्येक भूमिका को पूर्ण निष्ठा एवं जिम्मेदारी के साथ निभाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि शिक्षक का मूल्यांकन प्रतिदिन होता है, इसलिए उसे प्रत्येक परिस्थिति में अपना सर्वोत्तम प्रयास करना चाहिए। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा अपनाए जा रहे शिक्षार्थी-केंद्रित दृष्टिकोण का उल्लेख करते हुए कहा कि शिक्षक, शिक्षाविद् एवं परामर्शदाता के रूप में हमें मिलकर शिक्षार्थियों के हित में

कार्य करना चाहिए। समारोह में विश्वविद्यालय की विभिन्न विद्याशाखाओं के निदेशक, प्राध्यापक, शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. कल्पना लखेड़ा द्वारा किया गया। डॉ. नीरजा सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता पर विशेष व्याख्यान

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र (CIQA) द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश के पूर्व कुलपति प्रो. एन. सी. गौतम ने मुख्य वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए शिक्षार्थी-केंद्रित शिक्षा, कौशल विकास और अकादमिक गुणवत्ता को उच्च शिक्षा की प्राथमिकता बताया। प्रो. गौतम ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रमुख प्रावधानों के संदर्भ में बहुविषयक एवं कौशल-आधारित शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने उद्योग और अकादमिक जगत के बीच मजबूत संवाद, प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों के विस्तार, क्रेडिट आधारित अध्ययन तथा पाठ्यक्रमों के निरंतर उन्नयन की आवश्यकता रेखांकित की। साथ ही, विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं पाठ्यक्रम संबंधी सूचनाओं को अधिक शिक्षार्थी-अनुकूल बनाने के सुझाव दिए। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने



विश्वविद्यालय में गुणवत्ता सुधार के निरंतर प्रयासों और पाठ्यक्रमों में कौशल विकास को सशक्त बनाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम का संयोजन CIQA के अपर निदेशक प्रो. गगन सिंह ने किया तथा निदेशक प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। व्याख्यान के उपरांत प्रो. गौतम ने कुलपति एवं शिक्षकों के साथ परिसर में वृक्षारोपण कर पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास का संदेश दिया।

उद्योग-शिक्षा सहयोग को सुदृढ़ बनाने पर विचार-विमर्श आयोजित

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के उद्योग-अकादमिक प्रकोष्ठ द्वारा 'उद्योग-शिक्षा सहयोग को सुदृढ़ बनाने में उद्योगों की भूमिका' विषय पर विचार-विमर्श सत्र आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य उद्योग जगत और उच्च शिक्षा के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित कर शिक्षार्थियों को रोजगारोन्मुख एवं कौशल-आधारित शिक्षा उपलब्ध कराने के उपायों पर चर्चा करना था। मुख्य वक्ता श्री नीरज शारदा, शारदा एलएलपी, चार्टर्ड अकाउंटेंट्स, हल्द्वानी ने बदलती औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम विकास, कौशल प्रशिक्षण, इंटरशिप, लाइव प्रोजेक्ट और व्यावहारिक अनुभव को बढ़ावा देने पर बल दिया। उन्होंने उद्योग-अकादमिक सहयोग को नवाचार, अनुसंधान, उद्यमिता एवं स्टार्टअप संस्कृति से जोड़ने की आवश्यकता भी रेखांकित की।



कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने की। उन्होंने शिक्षार्थियों की रोजगार क्षमता बढ़ाने तथा उद्योगों की अपेक्षाओं के अनुरूप पाठ्यक्रम विकसित करने में उद्योग-अकादमिक साझेदारी को विश्वविद्यालय की प्राथमिकता बताया। निदेशक अकादमिक प्रो. पी. डी. पंत ने अतिथियों का स्वागत किया, जबकि प्रकोष्ठ की संयोजिका प्रो. मंजरी अग्रवाल ने इसकी कार्ययोजना एवं भावी गतिविधियों की जानकारी दी। सत्र में नियमित संवाद, विशेषज्ञ व्याख्यान, औद्योगिक भ्रमण, संयुक्त अनुसंधान, कौशल विकास कार्यक्रम, इंटरनशिप एवं उद्योगों के साथ समझौता ज्ञापनों को बढ़ावा देने पर चर्चा हुई। विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों एवं विभिन्न संकायों के प्रतिनिधियों ने सक्रिय सहभागिता की।

कौशल विकास कार्यशाला से रोजगार और उद्यमिता को मिला नया आयाम

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के पर्यटन, आतिथ्य एवं होटल प्रबंधन विद्यालय द्वारा कॉमनवेल्थ एजुकेशनल मीडिया सेंटर फॉर एशिया (CEMCA), नई दिल्ली के सहयोग से "हॉस्पिटैलिटी, उद्यमिता एवं रोजगारपरकता" विषय पर एक दिवसीय कौशल विकास कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला एनसीवीईटी (NCVT) द्वारा अनुमोदित "असिस्टेंट होमस्टे मैनेजर (NSQF Level-5)" योग्यता पैक के अनुरूप आयोजित की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सीआईक्यूए के निदेशक प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे ने की, जबकि कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी कार्यक्रम के संरक्षक रहे।



कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को असिस्टेंट होमस्टे मैनेजर पाठ्यक्रम की उपयोगिता, कौशल आधारित रोजगार एवं स्वरोजगार की, संभावनाओं तथा पर्यटन एवं हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र में उभरते अवसरों से परिचित कराना था। आईएचएम, देहरादून के प्रधानाचार्य डॉ. शिव मोहन तथा जी.बी. पंत इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, हल्द्वानी के निदेशक डॉ. आदर्श पंत ने विशेषज्ञ वक्ता के रूप में होमस्टे प्रबंधन, उद्यमिता, कौशल विकास एवं उद्योग की वर्तमान आवश्यकताओं पर विस्तृत जानकारी साझा की। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे ने कहा कि कौशल आधारित शिक्षा युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार एवं स्वरोजगार के नए अवसर सृजित करने का

प्रभावी माध्यम है। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं कुलगीत से हुआ। डॉ. मनोज कुमार पाण्डेय ने कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा अंत में प्रो. पी.डी. पंत ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रो. एम.एम. जोशी, प्रो. आशुतोष कुमार भट्ट, प्रो. पी.डी. पंत, डॉ. अखिलेश सिंह, डॉ. विशाल कुमार शर्मा, डॉ. आशीष टम्टा, डॉ. गोपाल दत्त, डॉ. सुधीर नौटियाल, डॉ. विवेक ममगाई, सुश्री प्रिया बोरा, सुश्री रिया गिरी सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक, शोधार्थी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।



यूओयू में महिला आयोग की भूमिका, चुनौतियों एवं संभावनाओं पर कार्यशाला आयोजित

महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता एवं महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र एवं समाजशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 17 जुलाई 2026 को "महिला आयोग : भूमिका, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। स्वागत उद्बोधन में प्रो. पी. डी. पंत, निदेशक, अकादमिक, ने महिला सशक्तिकरण को समावेशी एवं न्यायपूर्ण समाज की आधारशिला बताते हुए ऐसे विषयों पर निरंतर संवाद की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. रेनू प्रकाश, निदेशक, समाज विज्ञान विद्याशाखा एवं महिला अध्ययन केंद्र, ने कार्यशाला की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि बदलते सामाजिक परिवेश में महिला आयोग की भूमिका और अधिक व्यापक एवं प्रभावी हुई है।



मुख्य वक्ता डॉ. पलक मित्तल, राष्ट्रीय महिला आयोग, ने महिला आयोग की संवैधानिक एवं वैधानिक भूमिका, महिलाओं के अधिकारों, घरेलू हिंसा, साइबर अपराध, कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न, बाल विवाह तथा महिला सुरक्षा से जुड़े विभिन्न कानूनों एवं संस्थागत व्यवस्थाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने महिलाओं से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने तथा उपलब्ध कानूनी व्यवस्थाओं का प्रभावी उपयोग करने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि श्रीमती कुसुम कंडवाल, अध्यक्ष, उत्तराखण्ड राज्य महिला आयोग, ने कहा कि आयोग पिछले 23 वर्षों से महिलाओं की समस्याओं के त्वरित समाधान एवं न्याय सुनिश्चित करने के लिए कार्यरत है। उन्होंने ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों की महिलाओं तक जागरूकता और

सहायता पहुँचाने के लिए शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता तथा संस्थागत सहयोग को आवश्यक बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि महिला सशक्तिकरण पूरे समाज की साझा जिम्मेदारी है तथा उच्च शिक्षण संस्थानों को ज्ञान के साथ-साथ सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वहन में भी अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने महिला अध्ययन, लैंगिक समानता एवं महिला अधिकारों से जुड़े विषयों पर अनुसंधान एवं जन-जागरूकता गतिविधियों को बढ़ावा देने पर बल दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नागेन्द्र गंगोला ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. डिगर सिंह फरस्वाण, निदेशक, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विभिन्न विद्याशाखाओं के निदेशक, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, शोधार्थी, विद्यार्थी तथा उत्तराखण्ड राज्य महिला आयोग के अधिकारियों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

गृह विज्ञान विभाग की कार्यशाला का सफल आयोजन

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ। समापन अवसर पर कुलपति ने कार्यशाला का निरीक्षण कर शिक्षार्थियों द्वारा तैयार किए गए विभिन्न रंगाई-छपाई उत्पादों, वस्त्रों, खाद्य पदार्थों और अन्य गतिविधियों का अवलोकन किया तथा उनके प्रयासों एवं रचनात्मकता की सराहना की। उन्होंने शिक्षार्थियों को निरंतर कौशल विकास एवं नवाचार के लिए प्रेरित किया। स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा की निदेशक प्रो. मंजरी अग्रवाल ने भी कार्यशाला को, शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व विकास और व्यावहारिक दक्षताओं को सुदृढ़ करने वाली महत्वपूर्ण पहल बताया।

विषय विशेषज्ञ प्रो. लता पांडे एवं डॉ. निवेदिता अवस्थी ने शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए गृह विज्ञान को जीवनोपयोगी कौशल, उद्यमिता, पोषण, स्वास्थ्य एवं आत्मनिर्भरता से जुड़ा कौशल-आधारित विषय बताया। कार्यशाला में शिक्षार्थियों ने उत्साह और सक्रिय सहभागिता के साथ विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया। विश्वविद्यालय के अधिकारियों एवं विषय विशेषज्ञों ने उनके प्रदर्शन तथा गृह विज्ञान विभाग के संकाय सदस्यों के प्रयासों की सराहना की। कार्यशाला के आयोजन में विभाग के संकाय सदस्यों एवं शोधार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही।



यूओयू में विश्व आत्महत्या निवारण दिवस पर मनोवैज्ञानिक कार्यशाला का आयोजन

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय एवं एम.बी.पी.जी. कॉलेज, हल्द्वानी के मनोविज्ञान विभाग तथा एंटी ड्रग सेल के संयुक्त तत्वावधान में विश्व आत्महत्या निवारण दिवस के उपलक्ष्य में 11 सितम्बर 2026 को 'सक्रिय पहल से आशा का सृजन' विषय पर एक दिवसीय मनोवैज्ञानिक कार्यशाला आयोजित की गई। विश्वविद्यालय के सी.डी.एस. जनरल बिपिन रावत बहुउद्देशीय सभागार में आयोजित इस कार्यशाला का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा आत्महत्या की रोकथाम हेतु व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्तर पर सक्रिय पहल को प्रोत्साहित करना था। समाज विज्ञान विद्याशाखा की निदेशक प्रो. रेनू प्रकाश ने स्वागत संबोधन में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व तथा इस दिशा में विद्याशाखा की गतिविधियों की जानकारी दी।



मनोविज्ञान विभाग की डॉ. सीता ने आधुनिक जीवनशैली में बढ़ते एकाकीपन की ओर ध्यान दिलाते हुए नकारात्मक भावनाओं को दबाने के बजाय समय रहते व्यक्त करने तथा परिवार एवं मित्रों की सहायक भूमिका पर बल दिया। निदेशक अकादमिक प्रो. पी.डी. पंत ने कहा कि जीवन अत्यंत मूल्यवान है और कोई भी समस्या जीवन से बड़ी नहीं होती। मुख्य अतिथि एम.बी.पी.जी. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एन.एस. बनकोटी ने विद्यार्थियों के संदर्भ में इस विषय को अत्यंत प्रासंगिक बताते हुए मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को कलंक के बजाय संवेदनशीलता एवं स्वीकार्यता के साथ देखने की आवश्यकता बताई। मुख्य वक्ता, सुशीला तिवारी मेडिकल कॉलेज के मनोवैज्ञानिक डॉ. युवराज पंत ने मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य के गहरे संबंध पर प्रकाश डालते हुए मानसिक स्वास्थ्य को समान प्राथमिकता देने का आग्रह किया।

उप-वक्ता डॉ. तनुश्री गौर ने जरूरतमंद व्यक्तियों को विशेषज्ञ सहायता तक पहुँचाने में समाज की भूमिका पर चर्चा की तथा ऐसे व्यक्तियों की पहचान हेतु पाँच चरणों वाली व्यावहारिक आकलन प्रक्रिया एवं टेली-मानस जैसी हेल्पलाइन सेवाओं की जानकारी दी। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने मानसिक स्वास्थ्य पर निरंतर संवाद की आवश्यकता बताते हुए कहा कि बढ़ते एकाकीपन के दौर में परिवार एवं करीबी मित्रों से नियमित रूप से भावनाएँ साझा करना आवश्यक है। कार्यशाला में एम.बी.पी.जी. कॉलेज के विद्यार्थियों ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से आत्महत्या को बढ़ावा देने वाले सामाजिक व्यवहारों पर प्रश्न उठाते हुए सामुदायिक सहयोग का संदेश दिया। विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान शोधार्थी द्वारा एक विशेष सत्र में व्यावहारिक सुझाव भी साझा किए गए। अंत में प्रो. पी.डी. पंत ने प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. किरण कर्नाटक ने तथा कार्यशाला का संयोजन डॉ. भाग्यश्री जोशी ने किया। कार्यक्रम में दोनों संस्थानों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

यूओयू एवं नीपा के सहयोग से एनईपी अभिमुखीकरण एवं संवेदीकरण कार्यक्रम संपन्न

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा), नई दिल्ली के सहयोग से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) अभिमुखीकरण एवं संवेदीकरण कार्यक्रम का आयोजन 7 से 15 सितंबर तक ऑनलाइन माध्यम से किया गया। इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से लगभग 180 शिक्षकों, शोधकर्ताओं एवं शिक्षाविदों ने सहभागिता की। कार्यक्रम के अंतर्गत एनईपी 2020 के विभिन्न आयामों पर केंद्रित कुल 16 अकादमिक सत्र आयोजित किए गए। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए यूओयू के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के बीच निरंतर संवाद, चिंतन और अनुभव-साझाकरण आवश्यक है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय इस प्रकार के अकादमिक उपक्रमों के माध्यम से उच्च शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण एवं समावेशी परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध है। इस अवसर पर नीपा की कुलपति प्रो. शशिकला वंजारी का वीडियो संदेश भी प्रसारित किया गया, जिसमें उन्होंने कार्यक्रम की शैक्षणिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए एनईपी 2020 की दृष्टि को संस्थागत व्यवहार से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया।

उद्घाटन सत्र में प्रो. अमित गौतम, निदेशक, यूजीसी मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र, नीपा; प्रो. प्रदीप कुमार मिश्रा, बैच निदेशक, नीपा; डॉ. सुमन नेगी, बैच समन्वयक एवं एसोसिएट प्रोफेसर, नीपा; तथा यूओयू के अकादमिक निदेशक प्रो. पी. डी. पंत की सहभागिता रही। कार्यक्रम के समापन पर कुलपति प्रो. लोहनी ने समन्वयक प्रो. डिगर सिंह फर्स्वाण अन्य बाह्य समन्वयकों एवं आयोजन से जुड़े सदस्यों के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह आयोजन एनईपी 2020 के व्यापक उद्देश्यों और उच्च शिक्षा में अपेक्षित शैक्षणिक परिवर्तनों को समझने की दिशा में एक महत्वपूर्ण अकादमिक पहल है। प्रतिभागियों की सक्रिय एवं सार्थक सहभागिता की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रम शिक्षकों को नीतिगत विमर्श से जोड़ने के साथ-साथ अनुभवों और विचारों



के आदान-प्रदान का प्रभावी मंच प्रदान करते हैं। यूओयू की शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा के निदेशक एवं कार्यक्रम के स्थानीय समन्वयक प्रो. डिगर सिंह फर्स्वाण ने कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी, नीपा की कुलपति प्रो. शशिकला वंजारी सहित नीपा के समस्त विशेषज्ञों, समन्वयकों एवं प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति की समझ को व्यापक बनाने के साथ-साथ विभिन्न राज्यों के शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के बीच सार्थक अकादमिक संवाद का अवसर प्रदान किया। कुलपति प्रो. लोहनी एवं प्रो. फर्स्वाण, दोनों ने यूओयू और नीपा के बीच इस अकादमिक सहयोग को भविष्य में और अधिक सुदृढ़ एवं व्यापक बनाने की अपेक्षा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आगामी समय में दोनों संस्थानों के मध्य संयुक्त प्रशिक्षण, शैक्षणिक एवं शोधपरक गतिविधियों की संभावनाओं को आगे बढ़ाया जाएगा।

‘सशक्त मन एवं सशक्त परिवार’ पर केंद्रित रहा राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी एवं NAPSWI, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 15-18 अगस्त 2026 तक 7वें राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह का आयोजन किया गया। ‘सशक्त मन एवं सशक्त परिवार’ की थीम पर आयोजित सप्ताह में मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक सहयोग, मनोसामाजिक देखभाल, परिवार परामर्श तथा सामाजिक कलंक से मुक्ति जैसे विषयों पर विभिन्न शैक्षणिक, जागरूकता एवं जनसंचार गतिविधियां आयोजित की गईं। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय परिवार ने शपथ ग्रहण तथा हस्ताक्षर अभियान में सहभागिता की। सप्ताह के दौरान सामुदायिक रेडियो ‘हैलो हल्द्वानी’ के माध्यम से पारिवारिक मुद्दों एवं संकटों में हस्तक्षेप, मनोसामाजिक देखभाल, समाज कार्य की भूमिका तथा वरिष्ठ नागरिकों की बदलती आवश्यकताओं जैसे विषयों पर विशेषज्ञ वार्ताएं प्रसारित की गईं। इसके अतिरिक्त UOU Live YouTube चैनल पर परिवार परामर्श में समाज कार्यकर्ताओं की भूमिका एवं मानसिक सुदृढ़ता से संबंधित वीडियो व्याख्यान प्रस्तुत किए गए।



कार्यक्रमों का विस्तार विश्वविद्यालय परिसर से बाहर भी किया गया। देहरादून परिसर, राजकीय इंटर कॉलेज टनकपुर तथा रुद्रपुर में मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। जय शारदा जनकल्याण समिति, कुसुमखेड़ा में ‘सशक्त मन एवं सशक्त परिवार’ विषय पर विशेष आउटरीच कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें बैनी सेना की महिलाओं ने सक्रिय सहभागिता की और मानसिक एवं पारिवारिक सशक्तिकरण से जुड़े अनुभव साझा किए। सप्ताह की गतिविधियों ने समाज कार्य की भूमिका को मानसिक स्वास्थ्य, परिवार एवं समुदाय के सशक्तिकरण से जोड़ते हुए सामाजिक जागरूकता और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा दिया। आयोजन की आगामी कड़ी में विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों के विशेषज्ञों की सहभागिता से ऑनलाइन वेबिनार भी आयोजित किया जा रहा है।

समयबद्ध परीक्षा एवं केंद्रीय मूल्यांकन से परिणाम घोषणा में नई गति

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक सत्र जुलाई 2026 में परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रक्रिया को समयबद्ध, सुव्यवस्थित एवं प्रभावी ढंग से संपन्न कर परीक्षा परिणाम शीघ्र जारी करने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। विश्वविद्यालय द्वारा जुलाई 2026 सत्र की परीक्षाओं का आयोजन 20 जुलाई से 27 अगस्त 2026 तक किया गया। परीक्षा प्रक्रिया के समानांतर विश्वविद्यालय द्वारा केंद्रीय मूल्यांकन 16 अगस्त 2026 से 13 सितम्बर 2026 तक संचालित किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा कुल 2,14,686 उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन किया गया। इनमें स्नातक स्तर की 1,10,980, प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों की 295, डिप्लोमा की 1,604, स्नातकोत्तर स्तर की 59,699 तथा ओएमआर आधारित 42,108 उत्तरपुस्तिकाएँ शामिल थीं। परीक्षाएँ कुल 80 परीक्षा केंद्रों पर आयोजित की गईं तथा 39,711 शिक्षार्थियों ने परीक्षाओं में सहभागिता की। इतने व्यापक स्तर पर परीक्षा एवं मूल्यांकन कार्य को निर्धारित समय-सीमा में



संपन्न करना विश्वविद्यालय की प्रशासनिक एवं शैक्षणिक कार्यक्षमता का महत्वपूर्ण उदाहरण रहा। विश्वविद्यालय ने परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से समन्वित करते हुए मात्र 20 दिनों में परीक्षा परिणाम जारी करने का उल्लेखनीय कार्य किया। केंद्रीय मूल्यांकन को सफल बनाने में देश के विभिन्न प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों से जुड़े लगभग 300 शिक्षकों एवं प्राध्यापकों की महत्वपूर्ण सहभागिता रही। मूल्यांकन कार्य में जामिया मिल्लिया इस्लामिया, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, रुहेलखंड विश्वविद्यालय सहित उत्तराखण्ड के विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों ने योगदान दिया। उत्तराखण्ड से कुमाऊँ विश्वविद्यालय एवं सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय सहित विभिन्न संस्थानों के शिक्षकों की सहभागिता भी रही। बड़ी संख्या में मूल्यांकनकर्ताओं के समन्वित प्रयासों के परिणामस्वरूप उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन निर्धारित अवधि में पूरा किया जा सका और परीक्षा परिणामों के शीघ्र प्रकाशन का मार्ग प्रशस्त हुआ। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के लिए केंद्रीय मूल्यांकन व्यवस्था का सफल संचालन केवल परीक्षा प्रक्रिया का एक प्रशासनिक चरण नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण मूल्यांकन एवं शिक्षार्थी-केंद्रित परीक्षा व्यवस्था की दिशा में एक महत्वपूर्ण संस्थागत उपलब्धि है।

आंगनबाड़ी केंद्र में पोषण जागरूकता, जंक फूड से बचाव का दिया संदेश

राष्ट्रीय पोषण माह के तहत उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग ने 30 सितंबर 2026 को कमलुवागांजा मेहता स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में पोषण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, गर्भवती एवं धात्री महिलाओं, बच्चों और अभिभावकों को जंक फूड के अत्यधिक सेवन से होने वाले स्वास्थ्य दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया गया। प्रतिभागियों को पैकेज्ड तथा अधिक नमक, चीनी और वसा वाले खाद्य पदार्थों के स्थान पर स्थानीय एवं पौष्टिक खाद्य पदार्थ अपनाने, संतुलित आहार, स्वच्छता और स्वस्थ जीवनशैली पर जानकारी दी गई। महिलाओं और बच्चों को एनीमिया,

टीकाकरण, शिशु एवं बाल आहार, गर्भावस्था और नवजात देखभाल, माहवारी स्वच्छता, स्वच्छ जल तथा डेंगू-मलेरिया सहित विभिन्न स्वास्थ्य विषयों पर पेम्पलेट वितरित किए गए। कार्यक्रम में बच्चों के लिए शिक्षाप्रद पोस्टर एवं खेल सामग्री तथा लाभार्थियों को सैनिटरी नैपकिन भी वितरित किए गए। स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा की निदेशक प्रो. मंजरी अग्रवाल के मार्गदर्शन में आयोजित कार्यक्रम में गृह विज्ञान विभाग की डॉ. दीपिका वर्मा, डॉ. प्रीति बोरा, श्रीमती मोनिका द्विवेदी और डॉ. ज्योति जोशी तथा आंगनबाड़ी केंद्र की प्रभारी श्रीमती नीमा रुवाली एवं सहायिका श्रीमती बबीता उपस्थित रहीं।



‘सशक्त मन, सशक्त परिवार’ पर ऑनलाइन सेमिनार आयोजित

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग द्वारा 7वें राष्ट्रीय समाज कार्य सप्ताह के अंतर्गत ‘सशक्त मन, सशक्त परिवार’ विषय पर ऑनलाइन सेमिनार आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक संबंधों, अंतरपीढ़ीगत जुड़ाव तथा बदलते सामाजिक परिवेश में परिवार की भूमिका पर विशेषज्ञों ने विचार साझा किए। राज्यभर से समाज कार्य के 103 से अधिक शिक्षार्थियों ने सहभागिता की। NPSWI के प्रो. अनूप कुमार भारतीय ने मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाने में परिवार की भूमिका को महत्वपूर्ण बताते हुए बदलती सामाजिक परिस्थितियों में परिवार को अधिक मानवीय एवं संतुलित बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। गुरु घासीदास केंद्रीय विश्वविद्यालय की प्रो. प्रतिभा जे. मिश्रा ने परिवार में संवाद, विश्वास और सहयोग को मानसिक स्वास्थ्य का

आधार बताते हुए जुड़ाव, संवाद एवं रचनात्मक दृष्टिकोण पर जोर दिया। उन्होंने सकारात्मक जीवनशैली, योग, ध्यान और रुचि-आधारित गतिविधियों को मानसिक स्वास्थ्य के लिए उपयोगी बताया। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की वरिष्ठ परामर्शदाता डॉ. तूलिका भट्टाचार्य ने अंतरपीढ़ीगत संबंधों एवं बुजुर्गों की देखभाल पर प्रकाश डालते हुए कहा कि परिवार भौगोलिक दूरी के बावजूद भावनात्मक रूप से जुड़े रह सकते हैं। उन्होंने डिमेंशिया से प्रभावित बुजुर्गों के साथ सम्मान, धैर्य और भावनात्मक जुड़ाव बनाए रखने की आवश्यकता रेखांकित की। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने समाज कार्य विभाग के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि स्वस्थ समाज का निर्माण व्यक्ति और परिवार से ही संभव है। कार्यक्रम ने ‘सशक्त मन, सशक्त परिवार’ की अवधारणा को मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक सशक्तिकरण से जोड़ते हुए परिवार की भूमिका को रेखांकित किया।



FCRA पर राष्ट्रीय वेबिनार में हुआ गहन कानूनी विमर्श, पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ लॉ द्वारा Foreign Contribution Regulation Act (FCRA) विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में FCRA के कानूनी प्रावधानों, नियामक पक्षों तथा समकालीन संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने अकादमिक विमर्श किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने की। उन्होंने FCRA की समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया। मुख्य वक्ता प्रो. हरबंस दीक्षित ने FCRA से जुड़े विभिन्न कानूनी एवं व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तार से विचार साझा किए और विदेशी अंशदान के नियमन से संबंधित विषयों की व्यापक समझ विकसित की।

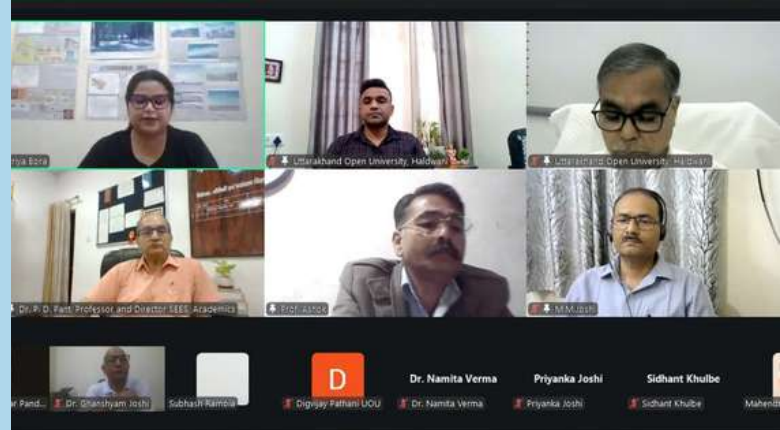


कार्यक्रम के स्वागत वक्तव्य में स्कूल ऑफ लॉ के निदेशक प्रो. कमल देव लाल ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. दीपांकर जोशी, समन्वयक, स्कूल ऑफ लॉ ने विषय की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए FCRA के महत्व और वर्तमान संदर्भ में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में प्रो. पी.डी. पंत, प्रोफेसर अकादमिक भी उपस्थित रहे। वेबिनार में विदेशी अंशदान के विनियमन, पारदर्शिता, जवाबदेही और संबंधित कानूनी प्रावधानों पर सार्थक चर्चा हुई। कार्यक्रम का संचालन सुश्री अंशु जोशी ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन सुश्री स्वाति उपाध्याय ने प्रस्तुत किया। उन्होंने अतिथियों, वक्ताओं, शिक्षकों, प्रतिभागियों और आयोजन समिति के सदस्यों के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया।

एआई से बदलेगा पर्यटन का अनुभव: यूओयू में डिजिटल टूरिज्म पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

विश्व पर्यटन दिवस 2026 के अवसर पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ टूरिज्म, हॉस्पिटैलिटी एवं होटल मैनेजमेंट (STHHM) विद्याशाखा ने सीका के सहयोग से 'Digital Agenda and Artificial Intelligence to Redesign Tourism' विषय पर ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में पर्यटन क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और डिजिटल तकनीक की संभावनाओं, उपयोग तथा चुनौतियों पर विशेषज्ञों ने विचार साझा किए। कार्यक्रम के स्वागत संबोधन में STHHM के निदेशक प्रो. एम.एम. जोशी ने विश्व पर्यटन दिवस की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि डिजिटल तकनीक और AI का प्रभावी उपयोग पर्यटन सेवाओं को अधिक सुगम, प्रभावी और पर्यटक-अनुकूल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश सिंह ने विश्व पर्यटन दिवस की पृष्ठभूमि की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 27 सितम्बर को विश्व पर्यटन दिवस मनाया जाता है और वर्ष 2026 में इसके आधिकारिक आयोजन की मेजबानी एल साल्वादोर ने की। मुख्य वक्ता प्रो. अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष, पर्यटन एवं आतिथ्य विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल ने पर्यटन एवं होटल उद्योग में AI और डिजिटल तकनीक के बढ़ते उपयोग पर चर्चा की। उन्होंने पर्यटन सेवाओं, प्रचार-प्रसार और पर्यटक अनुभव को बेहतर बनाने में AI की संभावनाओं को रेखांकित करते हुए इसके संभावित जोखिमों के प्रति भी सतर्क रहने की आवश्यकता बताई।



अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. गिरिजा पांडे, निदेशक, सीका ने उत्तराखण्ड और हिमालयी क्षेत्रों में पर्यटन के संदर्भ में तकनीक के उपयोग पर विशेष जोर दिया। उन्होंने मौसम पूर्वानुमान, ट्रैफिक प्रबंधन, होटल बुकिंग और डेस्टिनेशन मैनेजमेंट जैसे क्षेत्रों में AI एवं डिजिटल तकनीक की संभावनाओं को रेखांकित किया तथा सतत पर्यटन के लक्ष्यों के अनुरूप इनके जिम्मेदार एवं संतुलित उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में यूओयू के शिक्षक, गैर-शैक्षणिक कार्मिक और विद्यार्थी ऑनलाइन माध्यम से जुड़े। डॉ. सुभाष रमोला, डॉ. मनोज कुमार पाण्डेय, प्रो. जितेंद्र पाण्डेय, डॉ. शशांक शुक्ला, डॉ. घनश्याम जोशी और डॉ. नीरज जोशी सहित अनेक प्रतिभागियों ने संगोष्ठी में सहभागिता की। मंच संचालन सुश्री प्रिया बोरा ने किया, जबकि अकादमिक निदेशक प्रो. पी.डी. पंत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

पोषण माह में बाल विकास और स्वस्थ जीवनशैली पर ऑनलाइन कार्यशाला आयोजित

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग द्वारा पोषण माह के अंतर्गत एक दिवसीय ऑनलाइन पोषण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने की। कार्यक्रम का उद्देश्य पोषण जागरूकता बढ़ाने के साथ बच्चों के समग्र विकास, स्वस्थ जीवनशैली और पोषण संबंधी व्यवहार में सकारात्मक बदलाव के लिए वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक जानकारी उपलब्ध कराना था। कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा की निदेशक प्रो. मंजरी अग्रवाल ने पोषण माह की विषयवस्तु और उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए संतुलित आहार, श्रीअन्न, स्वस्थ जीवनशैली तथा कुपोषण एवं मोटापे जैसी समानांतर पोषण चुनौतियों पर चर्चा की। उन्होंने सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के माध्यम से वैज्ञानिक पोषण जानकारी के प्रसार की संभावनाओं को भी रेखांकित किया। प्रथम तकनीकी सत्र में गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर की सेवानिवृत्त पूर्व अधिष्ठाता प्रो. रीता सिंह रघुवंशी ने 'बाल्यावस्था विकास के लिए पोषण और शुरुआती प्रोत्साहन' विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने जीवन के पहले छह वर्षों को बाल विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताते हुए संतुलित आहार के साथ स्नेह, संवाद, देखभाल और सकारात्मक पारिवारिक वातावरण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने खेल, कहानी, चित्रों और घरेलू गतिविधियों के माध्यम से बच्चों के साथ संवाद बढ़ाने तथा भोजन के समय मोबाइल से बचने की सलाह दी।



द्वितीय सत्र में राजकीय डिग्री कॉलेज, कांडा (बागेश्वर) की सहायक प्राध्यापक डॉ. मनीषा काराकोटी ने 'पोषण की शक्ति को जानें' विषय पर पोषक तत्वों, संतुलित आहार, पर्याप्त जल, फाइबरयुक्त, स्थानीय एवं मौसमी खाद्य पदार्थों के महत्व को सरल उदाहरणों से समझाया। उन्होंने AI एवं डिजिटल माध्यमों से पोषण संबंधी जानकारी लेते समय उसकी विश्वसनीयता जांचने की आवश्यकता के साथ नियमित शारीरिक गतिविधि, पर्याप्त नींद और तनाव प्रबंधन को स्वस्थ जीवनशैली का हिस्सा बताया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने पोषण को शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास से जुड़ा महत्वपूर्ण आयाम बताया। उन्होंने बच्चों के प्रारंभिक वर्षों में उचित

पोषण, देखभाल और सकारात्मक वातावरण के महत्व को रेखांकित करते हुए प्रतिभागियों से कार्यशाला की जानकारी परिवार एवं समुदाय तक पहुंचाने का आह्वान किया। कार्यशाला में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं अन्य प्रतिभागियों ने ऑनलाइन सहभागिता की। श्रीमती मोनिका द्विवेदी ने संचालन तथा डॉ. प्रीति बोरा ने आभार व्यक्त किया।

एमएजेएमसी पाठ्यक्रम में प्राचीन भारतीय संचार व्यवस्था और एआई आधारित मीडिया को मिली जगह

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा की अध्ययन बोर्ड (BOS) की बैठक में एम.ए. पत्रकारिता एवं जनसंचार (MAJMC) कार्यक्रम की पाठ्य संरचना के व्यापक पुनर्गठन पर विचार किया गया। बैठक की अध्यक्षता निदेशक प्रो. राकेश चन्द्र रयाल ने की। पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, समकालीन मीडिया परिदृश्य और उद्योग की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप अद्यतन करने की संस्तुति की गई। पुनर्गठित 80-क्रेडिट कार्यक्रम में डिजिटल पत्रकारिता, नई संचार तकनीक, साइबर मीडिया, मीडिया कानून एवं नैतिकता, समकालीन पत्रकारिता, मीडिया अनुसंधान और व्यावहारिक प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी स्थान दिया गया।

चौथे सेमेस्टर में 'प्राचीन भारतीय संचार व्यवस्था' और 'एआई और मीडिया' जैसे नए पाठ्यक्रम शामिल किए गए हैं। इससे शिक्षार्थियों को भारतीय संचार परंपरा के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित आधुनिक मीडिया तकनीकों को समझने का अवसर मिलेगा। बैठक में विशेषज्ञों ने नई पाठ्य संरचना को भविष्य उन्मुख एवं रोजगारपरक बताया। अध्ययन सामग्री लेखन के लिए विषय विशेषज्ञों के नामों पर भी विचार किया गया। बाह्य विशेषज्ञों ने ऑनलाइन सहभागिता की। प्रो. राकेश चन्द्र रयाल ने कहा कि नया पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को भारतीय ज्ञान परंपरा और अत्याधुनिक तकनीकों, दोनों से परिचित कराते हुए भविष्य की मीडिया चुनौतियों के लिए तैयार करेगा।



यूओयू में औषधीय जड़ी-बूटियों पर आधारित पुस्तक का विमोचन

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी में आयोजित वृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण संरक्षण और ज्ञान संवर्धन का अनूठा संगम देखने को मिला। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी, योजना बोर्ड के सदस्य प्रो. प्रदीप कुमार जोशी, मुख्य वन संरक्षक (कुमाऊँ) डॉ. तेजस्विनी अरविन्द पाटिल (आईएफएस) तथा डॉ. बी. एस. कालाकोटी ने संयुक्त रूप से पौधारोपण कर हरित भविष्य के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की तथा समाज से अधिकाधिक वृक्षारोपण एवं पौधों के संरक्षण का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. बी. एस. कालाकोटी एवं डॉ. गरिमा मटेला द्वारा लिखित पुस्तक "Glossary of Commercial Medicinal Herbs



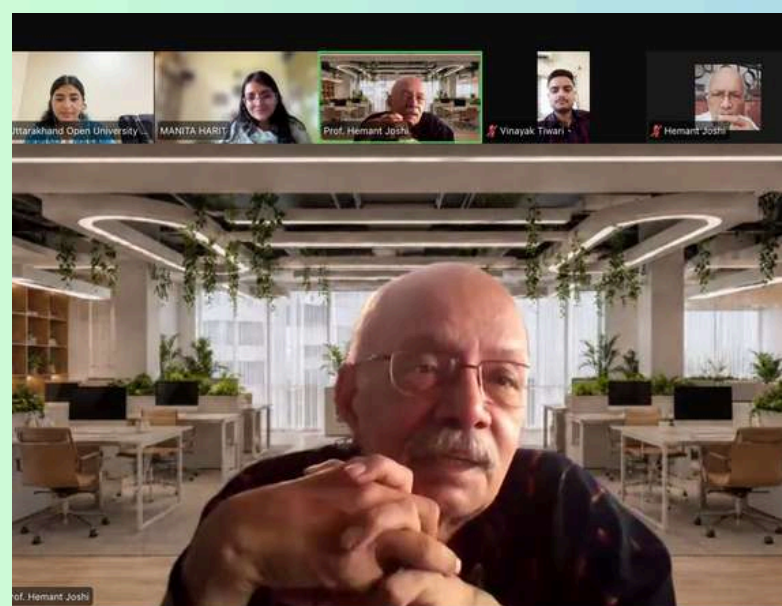
of Uttarakhand" का विमोचन भी किया गया। पुस्तक के सह-लेखक डॉ. कालाकोटी ने बताया कि इसमें उत्तराखण्ड की व्यावसायिक एवं औषधीय महत्व की जड़ी-बूटियों का प्रामाणिक एवं उपयोगी संकलन किया गया है, जो शोधार्थियों, विद्यार्थियों, कृषकों, उद्यमियों तथा औषधीय पादपों के क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ सिद्ध होगा। विशिष्ट अतिथि डॉ. तेजस्विनी अरविन्द पाटिल ने जैव विविधता संरक्षण में वृक्षारोपण के साथ पौधों के संरक्षण एवं वैज्ञानिक प्रलेखन की आवश्यकता पर बल दिया। वहीं मुख्य अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार जोशी ने पुस्तक को उत्तराखण्ड की समृद्ध औषधीय वनस्पति विरासत के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास बताते

हुए इसके हिन्दी संस्करण के प्रकाशन का सुझाव दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने कहा कि विश्वविद्यालय पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता संवर्धन तथा पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। उन्होंने पुस्तक के प्रकाशन को विश्वविद्यालय एवं राज्य के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हुए इसके लेखकों को बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन प्रो. ललित तिवारी तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गरिमा मटेला ने किया। विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर कार्यक्रम को सफल बनाया।



एआई के दौर में पॉडकास्टिंग: विश्वसनीयता और मानवीय संवेदना पर जोर

अंतरराष्ट्रीय पॉडकास्ट दिवस के अवसर पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्याशाखा और सामुदायिक रेडियो 'हैलो हल्द्वानी 91.2 एफएम' के संयुक्त तत्वावधान में 30 सितंबर 2026 को 'एआई के दौर में पॉडकास्टिंग: डिजिटल कथावाचन, विश्वसनीयता और समावेशी संचार का भविष्य' विषय पर वेबिनार आयोजित किया गया।



मुख्य वक्ता भारतीय जनसंचार संस्थान (आईआईएमसी), नई दिल्ली के पूर्व प्रोफेसर प्रो. हेमंत जोशी ने रेडियो, फिल्म और टेलीविजन से पॉडकास्टिंग तक मीडिया के विकास पर चर्चा करते हुए रिकॉर्डिंग, संपादन और अन्य तकनीकी कार्यों में एआई की उपयोगिता बताई। उन्होंने एआई को सहायक तकनीक के रूप में अपनाने के साथ मानवीय निगरानी, तथ्य-जांच और संपादकीय समीक्षा को आवश्यक बताया। उन्होंने पॉडकास्टिंग में रचनात्मकता, संवाद और विश्वसनीयता बनाए रखने पर भी जोर दिया। विद्याशाखा के निदेशक प्रो. राकेश चन्द्र रयाल ने पॉडकास्टिंग के विकास और डिजिटल मीडिया में इसकी बढ़ती प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने 'हैलो हल्द्वानी 91.2 एफएम' की पॉडकास्टिंग पहल की सराहना की

प्रश्नोत्तर सत्र में शोधार्थियों और शिक्षार्थियों ने एआई आधारित मीडिया उत्पादन एवं डिजिटल संचार से जुड़े प्रश्न पूछे। कार्यक्रम का संचालन सहायक प्राध्यापिका सुश्री हर्षिता मेहता ने किया और धन्यवाद ज्ञापन श्री अनिल नैलवाल ने दिया।

हरिद्वार में यूओयू का क्षेत्रीय कार्यालय खुला, पुस्तक मेले में विद्यार्थियों को मिलीं सैकड़ों निःशुल्क पुस्तकें

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय ने 29 सितंबर 2026 को एस.एम.जे.एन. पी.जी. कॉलेज, हरिद्वार में अपना क्षेत्रीय कार्यालय शुरू किया। उद्घाटन के अवसर पर विद्यार्थियों में पठन-पाठन की संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विशाल पुस्तक मेले का आयोजन भी किया गया, जिसमें विभिन्न विषयों की सैकड़ों पाठ्य पुस्तकें विद्यार्थियों को निःशुल्क वितरित की गईं। कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहानी ने कहा कि क्षेत्रीय कार्यालय के शुरू होने से हरिद्वार और आसपास के विद्यार्थियों को प्रवेश, परीक्षा, अध्ययन सामग्री तथा शैक्षणिक मार्गदर्शन जैसी सुविधाएं स्थानीय स्तर पर उपलब्ध हुईं। उन्होंने इसे उच्च शिक्षा को अधिकाधिक विद्यार्थियों तक पहुंचाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताते हुए एस.एम.जे.एन. महाविद्यालय के सहयोग की सराहना की और दोनों संस्थानों के बीच शैक्षणिक समन्वय को मजबूत करने की बात कही।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्रीमहंत डॉ. रविन्द्र पुरी जी महाराज ने शिक्षा को समाज और राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम बताया। उन्होंने विद्यार्थियों को पुस्तकों को अपना मित्र बनाने तथा शिक्षा के साथ संस्कार और सामाजिक उत्तरदायित्व को जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने निःशुल्क पुस्तक वितरण की पहल को विद्यार्थियों में अध्ययन की आदत विकसित करने की दिशा में उपयोगी बताया। क्षेत्रीय सेवाएं निदेशक डॉ. गिरिजा पांडे ने बदलते शैक्षणिक परिवेश में विद्यार्थियों को लचीले और वैकल्पिक अध्ययन अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर जोर दिया।



अतिरिक्त निदेशक क्षेत्रीय सेवाएं डॉ. एम.एम. जोशी ने कहा कि क्षेत्रीय कार्यालय के माध्यम से विश्वविद्यालय की शैक्षणिक एवं प्रशासनिक सेवाओं की जानकारी और आवश्यक मार्गदर्शन स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कराया जा सकेगा। सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. बृजेश बनकोटी ने कार्यालय की भूमिका को प्रवेश, परीक्षा, अध्ययन सामग्री और अन्य अकादमिक गतिविधियों से जुड़ी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के समाधान में महत्वपूर्ण बताया। पुस्तक मेले में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकों का चयन किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. डॉ. सुनील कुमार बत्रा, विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के शिक्षक-कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बृजेश बनकोटी ने किया। अध्ययन केंद्र समन्वयक डॉ. शिवकुमार चौहान ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दीक्षांत समारोह 2026 की तैयारियों पर यूओयू में अनुश्रवण बैठक

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में आगामी दीक्षांत समारोह 2026 की तैयारियों एवं शैक्षणिक गतिविधियों की समीक्षा के लिए 30 सितंबर 2026 को सी.डी.एस. जनरल बिपिन रावत बहुउद्देशीय सभागार में वार्षिक अनुश्रवण बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहानी ने की। बैठक में परीक्षाओं के संचालन, परीक्षा परिणाम, प्रवेश प्रक्रिया और आगामी दीक्षांत समारोह की तैयारियों की समीक्षा की गई। कुलसचिव श्री खेमराज भट्ट ने समारोह के लिए गठित समितियों की जानकारी दी। कुलपति ने दीक्षांत समारोह को महत्वपूर्ण अवसर बताते हुए सभी अधिकारियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों से समन्वय और सक्रिय सहभागिता के साथ तैयारियां समयबद्ध रूप से पूरा करने का आह्वान किया। बैठक में निदेशक अकादमिक प्रो. पी.डी. पंत, शोध निदेशालय के प्रमुख प्रो. गिरिजा प्रसाद पाण्डे सहित विश्वविद्यालय के शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे।



शैक्षणिक भ्रमण से जैव प्रौद्योगिकी की आधुनिक तकनीकों से रूबरू हुए शिक्षार्थी

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के वानिकी एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित एम.एससी. पर्यावरण विज्ञान तृतीय सेमेस्टर की सात दिवसीय कार्यशाला के अंतर्गत शिक्षार्थियों को उत्तराखण्ड काउंसिल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, पंतनगर का शैक्षणिक भ्रमण कराया गया। विश्वविद्यालय की भौमिकी एवं पर्यावरण विज्ञान विद्याशाखा के निदेशक प्रो. पी.डी. पंत ने शैक्षणिक भ्रमण को प्रयोगात्मक शिक्षण का महत्वपूर्ण अंग बताते हुए कहा कि इससे शिक्षार्थियों के व्यावहारिक ज्ञान में वृद्धि होती है। विभागीय समन्वयक डॉ. एच.सी. जोशी ने बताया कि भ्रमण का उद्देश्य शिक्षार्थियों को पर्यावरण विज्ञान में जैव प्रौद्योगिकी के विविध अनुप्रयोगों से परिचित कराना था।

भ्रमण के दौरान शिक्षार्थियों ने पादप ऊतक संवर्धन, आणविक जीवविज्ञान एवं जेनेटिक इंजीनियरिंग, जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशालाओं तथा हाइड्रोपोनिक्स पॉलीहाउस का अवलोकन किया। संस्थान के वैज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों ने पर्यावरणीय प्रभाव आकलन, टिशू कल्चर, आनुवंशिक सुधार, लुप्तप्राय पौधों के संरक्षण, रोग प्रतिरोधी किस्मों के विकास तथा उन्नत जैव प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों से संबंधित शोध कार्यों की जानकारी दी। डॉ. सुमित पुरोहित एवं डॉ. मणीन्द्र मोहन के मार्गदर्शन में शिक्षार्थियों ने नवीनतम जैव प्रौद्योगिकी तकनीकों की विस्तृत जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. प्रीति पंत, डॉ. खष्टी डसीला तथा संस्थान के प्रयोगशाला सहायक ललित मिश्रा, अमन प्रताप सिंह एवं शैलजा आर्या उपस्थित रहे। भ्रमण के समापन पर डॉ. प्रीति पंत ने संस्थान के निदेशक प्रो. संजय कुमार सहित समस्त अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों का आभार व्यक्त किया।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर यूओयू में खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी में राष्ट्रीय खेल दिवस-2026 के अवसर पर 29 अगस्त को विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों, शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों में खेल भावना, अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, शारीरिक फिटनेस तथा स्वस्थ जीवनशैली को प्रोत्साहित करना रहा। प्रतियोगिताओं में 100, 200, 400 एवं 1000 मीटर दौड़, शॉट पुट, डिस्कस थ्रो, रस्साकशी एवं शतरंज सहित विभिन्न स्पर्धाएं आयोजित की गईं। कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया। उन्होंने मेजर ध्यानचंद के खेल जीवन एवं देश के प्रति योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि खेल शारीरिक स्वास्थ्य के साथ अनुशासन, आत्मविश्वास, नेतृत्व एवं टीम भावना के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने यह भी बताया कि 'खेलो इंडिया संवाद' कार्यक्रम के लिए नैनीताल जिले से उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय का कैटेगरी-1 संस्थान के रूप में चयन विश्वविद्यालय के लिए गौरव की उपलब्धि है।

विभिन्न स्पर्धाओं में शिक्षार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। विद्यार्थी वर्ग में 100 एवं 200 मीटर दौड़ में विक्रम सिंह, 400 एवं 1000 मीटर में दीपक पंत, शतरंज में सुमित बसेरा, शॉट पुट में कृष्णा महाराज तथा डिस्कस थ्रो में कमलेश धामी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। महिला कर्मचारी वर्ग में मोनिका भदौरिया ने 100 एवं 200 मीटर दौड़ तथा डॉ. शालिनी चौधरी ने शॉट पुट एवं डिस्कस थ्रो में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। पुरुष कर्मचारी वर्ग में डॉ. दीपक शर्मा ने 100 एवं 200 मीटर दौड़ तथा डॉ. एस.एस. कुंजवाल ने डिस्कस थ्रो में प्रथम स्थान प्राप्त किया।



समापन अवसर पर कुलपति ने विजेताओं एवं प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए और विश्वविद्यालय में शैक्षणिक गतिविधियों के साथ खेलकूद को बढ़ावा देने को सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक बताया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं शिक्षार्थी उपस्थित रहे।

प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने संभाला कुमाऊं विश्वविद्यालय का अतिरिक्त दायित्व

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी को कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल के कुलपति का अतिरिक्त दायित्व सौंपा गया। माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेवानिवृत्त) के आदेशानुसार प्रो. लोहनी ने 1 सितम्बर 2026 से 21 सितम्बर 2026 तक यह जिम्मेदारी निभाई। इस अवधि में उन्होंने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक एवं प्रशासनिक व्यवस्थाओं में निरंतरता बनाए रखने के दायित्व का निर्वहन किया।



21 सितम्बर 2026 को प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट ने कुमाऊं विश्वविद्यालय के नए कुलपति के रूप में कार्यभार ग्रहण किया, जिसके साथ प्रो. लोहनी का अतिरिक्त दायित्व पूर्ण हुआ। कार्यभार सौंपते हुए प्रो. लोहनी ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दीं और शिक्षा, शोध, नवाचार तथा अकादमिक उत्कृष्टता के क्षेत्र में विश्वविद्यालय की निरंतर प्रगति की उम्मीद व्यक्त की। अपने 21 दिवसीय कार्यकाल को प्रो. लोहनी ने महत्वपूर्ण अकादमिक एवं प्रशासनिक अनुभव बताते हुए कुलाधिपति, विश्वविद्यालय के अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों एवं समस्त विश्वविद्यालय परिवार के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय और कुमाऊं विश्वविद्यालय के बीच शैक्षणिक, शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में भविष्य में और अधिक सहयोग एवं समन्वय की संभावनाओं पर भी जोर दिया।

यूओयू के दो शिक्षकों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित नवाचार के लिए डिज़ाइन पेटेंट

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी ने शोध एवं नवाचार के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। विश्वविद्यालय के कंप्यूटर एवं आईटी विभाग के सहायक निदेशक अनुराग भट्ट तथा स्कूल ऑफ वोकेशनल स्टडीज के निदेशक प्रो. आशुतोष कुमार भट्ट को उनके अभिनव नवाचार "कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित हृदय रोग जोखिम दृश्यांकन एवं विश्लेषण प्रणाली" के लिए भारत सरकार द्वारा डिज़ाइन पेटेंट प्रदान किया गया है। यह पेटेंट डिज़ाइन एक्ट, 2000 एवं डिज़ाइन नियम, 2001 के अंतर्गत पंजीकृत किया गया है।



यह पेटेंट डिज़ाइन संख्या 498410-001 के अंतर्गत 13 अप्रैल 2026 को श्रेणी 24-01 में पंजीकृत किया गया, जिसकी प्रमाणन तिथि 11 जून 2026 है। विकसित प्रणाली कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं उन्नत डेटा दृश्यांकन तकनीकों के माध्यम से हृदय रोग से संबंधित जोखिमों का वैज्ञानिक विश्लेषण तथा स्पष्ट दृश्य प्रस्तुतीकरण उपलब्ध कराती है। विशेषज्ञों के अनुसार यह नवाचार डिजिटल हेल्थकेयर, चिकित्सा अनुसंधान तथा एआई आधारित स्वास्थ्य सेवाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देगा। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र



लोहनी, पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विभाग के निदेशक प्रो. राकेश रयाल, प्रो. जीतेंद्र पाण्डे, कुलसचिव डॉ. खेमराज भट्ट तथा विश्वविद्यालय परिवार के शिक्षकों एवं अधिकारियों ने अनुराग भट्ट एवं प्रो. आशुतोष कुमार भट्ट को बधाई देते हुए इसे विश्वविद्यालय की शोध एवं नवाचार परंपरा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस प्रकार के अनुसंधान भविष्य में राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में सार्थक योगदान देंगे।

डॉ. नीलिमा बुधानी के तकनीकी डिजाइन को ‘भारत सरकार’ से पंजीकरण

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ कंप्यूटर साइंस एवं आईटी की असिस्टेंट प्रोफेसर (एसी) डॉ. नीलिमा बुधानी ने तकनीकी अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। उनके नेतृत्व में विकसित ‘Integrated Computing and Software Engineering Device’ के डिजाइन को भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय द्वारा पंजीकरण प्रदान किया गया है।

यह उपकरण कंप्यूटिंग एवं सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग से संबंधित कार्यों के लिए एक एकीकृत एवं कॉम्पैक्ट कंप्यूटिंग प्लेटफॉर्म के रूप में विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य विभिन्न कंप्यूटिंग कार्यों को एक सुव्यवस्थित डिवाइस में समेकित कर तकनीकी एकीकरण और उपयोग-सुविधा को बढ़ावा देना है। इस उपलब्धि को विश्वविद्यालय में अनुप्रयुक्त अनुसंधान, अंतर्विषयी नवाचार एवं प्रौद्योगिकी-आधारित अकादमिक विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना गया। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने डॉ. नीलिमा बुधानी को बधाई देते हुए विश्वविद्यालय में अनुसंधान एवं नवाचार की संस्कृति को निरंतर प्रोत्साहित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।



यूओयू के शिक्षार्थी शिवम ढौंडियाल का सत्यार्थी फेलोशिप-2026 के लिए चयन

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के एम.एससी. पर्यावरण विज्ञान (2024–26) के शिक्षार्थी शिवम ढौंडियाल का प्रतिष्ठित सत्यार्थी फेलोशिप-2026 के प्रथम बैच के लिए चयन हुआ। विश्व के 35 देशों से प्राप्त करीब 1,200 आवेदनों में से चयनित 25 युवा परिवर्तनकारी नेतृत्वकर्ताओं में शिवम शामिल हैं। फेलोशिप का आधिकारिक शुभारंभ 17 सितंबर 2026 को नई दिल्ली में होगा। एग्रोप्रेन्योर, पर्यावरणविद् एवं विकास पेशेवर के रूप में शिवम वर्ष 2015 से Naturorganics के माध्यम से हिमालयी जैव-संसाधनों के मूल्य संवर्धन, टिकाऊ कृषि, ग्रामीण उद्यमिता एवं वैकल्पिक आजीविका के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। उनके प्रयासों में हर्बल उत्पाद एवं खाद्य प्रसंस्करण, एग्रोफॉरेस्ट्री, कीवी उत्पादन, पॉलीहाउस कृषि तथा ग्रामीण युवाओं के लिए उद्यमिता विकास जैसे कार्य शामिल हैं। उनके कार्य हिमालयी क्षेत्रों में स्थानीय संसाधनों के सतत उपयोग और ग्रामीण आजीविका के अवसरों से जुड़े रहे हैं।



फेलोशिप के अंतर्गत चयनित 25 फेलो जयपुर स्थित बाल भवन में लगभग एक माह के आवासीय एवं सहभागी कार्यक्रम में विशेषज्ञों और मार्गदर्शकों के साथ सामाजिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों पर विचार-विमर्श करेंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य युवा नेतृत्वकर्ताओं को सामूहिक सीख और अनुभव के माध्यम से अपने सामाजिक सरोकारों को प्रभावी कार्यों में बदलने का अवसर प्रदान करना है।

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहानी ने शिवम ढौंडियाल को बधाई देते हुए उनके चयन को विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय बताया। उन्होंने कहा कि शिवम के पर्यावरण संरक्षण, ग्रामीण आजीविका और हिमालयी क्षेत्रों के सतत विकास से जुड़े प्रयास उनकी प्रतिबद्धता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को दर्शाते हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि फेलोशिप के माध्यम से शिवम हिमालयी समाज की चुनौतियों और संभावनाओं को व्यापक मंच पर प्रस्तुत करने के साथ अन्य युवाओं को भी सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करेंगे।

विश्वविद्यालय परिवार ने भी शिवम को इस उपलब्धि पर शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

यूक्योयू ने कैंदीय कारागार सिताराने के साथ अनुभव कर जेल परिसर में खोला अध्ययन केंद्र विशेष केंद्र के माध्यम से बंदियों को मुफ्त शिक्षा दी जा रही है। इस मौके पर विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से कारागार की पुस्तकालय के लिए विभिन्न विषयों की लगभग 280 पुस्तकें भी भेंट की गईं। कारागार के बरिफ अधीनस्थ अनुगमन गतिवि, निदेशक क्षेत्रीय सेवाएं प्र. गिरिजा पाण्डे, उपनिदेशक प्रो. प्रमोद जोशी कल्याणनियं डॉ. योगेश



मीडिया की सुर्खियों में विश्वविद्यालय



नशामुक्त युवा ही विकसित भारत की नींव : उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में दिलाई गई शपथ

एंट्री ड्रग खेल ने आयोजित किया जागरूकता कार्यक्रम, छात्र-छात्राओं और कर्मचारियों ने लिया नशे से दूर रहने का संकल्प

● जनजाति संवाददाता, हल्द्वानी

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी में रविवार को नशामुक्त युवा फार विकसित भारत अभियान के तहत न्यामुक्त जागरूकता एवं सामूहिक शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। राज्यपाल सचिवालय, उत्तराखंड और भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं, शिक्षकों और कर्मचारियों ने नशे से दूर रहने तथा समाज को इसके दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने का

अवलोकन से हुआ। इस दौरान प्रतिभागियों ने राष्ट्र निर्माण, युवा शक्ति और नशामुक्त भारत के संकल्प से जुड़े प्रथममंत्री के विचारों को सुना।

कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने की। उन्होंने कहा कि युवा देश की सबसे बड़ी शक्ति हैं और विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए युवाओं का स्वस्थ, जागरूक और अनुशासित होना आवश्यक है। उन्होंने विद्यार्थियों से नशे जैसी सामाजिक बुराई से दूर रहने और समाज में नशामुक्त का संदेश फैलाने का आह्वान किया।

विश्वविद्यालय की एंट्री ड्रग खेल के प्रभारी डॉ. धनुष प्रकाश जोशी ने कहा कि नशा व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन पर गंभीर प्रभाव डालता है। उन्होंने युवाओं से योग, खेल और सकारात्मक



उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर नशे के खिलाफ जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, ताकि विद्यार्थियों और समाज में नशे के दुष्प्रभावों को लेकर जागरूकता बढ़ाई जा सके। कार्यक्रम में डॉ. सीता, डॉ. जगमोहन और

अध्यापकों और प्रशिक्षकों ने भी कार्यक्रम में सक्रिय सहभागिता की। समापन अवसर पर 50 से अधिक छात्र-छात्राओं, शिक्षकों और कर्मचारियों ने नशामुक्त युवा विकसित भारत का संकल्प लेते हुए सामूहिक शपथ ग्रहण की। सभी

शिक्षार्थी केंद्रित और कौशल आधारित बने शिक्षण व्यवस्था

यूओयू में विशेष व्याख्यान आयोजित

उत्तर उजाला संवाददाता

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में सोमवार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं मुक्त एवं स्थिर शिक्षा में गुणवत्ता विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के प में महात्मा गांधी चित्रकूट मोदय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. एनसी गौतम ने कहा कि शिक्षा नीति का प्रभावी न्यायन्यन तभी संभव है, जब शिक्षण व्यवस्था को शिक्षार्थी केंद्रित और कौशल आधारित बनाया जाए।

जोर दिया। उन्होंने विश्वविद्यालयों में उद्योगों के साथ समन्वय बढ़ाने प्रमाण पत्र पाठ्यक्रमों का विस्तार करने तथा क्रेडिट आधारित अध्ययन सामग्री विकसित करने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम के अध्यक्षता करते हुए यूओयू के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कहा कि विश्वविद्यालय गुणवत्ता सुधार के लिए लगातार प्रयासरत है। उन्होंने पाठ्यक्रमों में कौशल विकास को और अधिक मजबूत बनाने तथा देश के अग्रणी विश्वविद्यालयों के नवाचारी पहलों को अपनाने का प्रतिबद्धता दोहराई। कार्यक्रम के अंतिम संचालन सीआईएसए के अप निदेशक प्रो. गगन सिंह ने किया।

विद्यार्थी की जरूरत और विकास हो शिक्षा का केंद्र

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की ओर से सोमवार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं मुक्त व दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश के पूर्व कुलपति प्रो. एनसी गौतम ने कहा कि शिक्षक का दायित्व केवल ज्ञान देना नहीं बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की प्रतिबद्धता विकसित करना भी है। शिक्षण को शिक्षार्थी केंद्रित बनाने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि

बीकाम, बीबीए और बीसीए में शुरू होंगे चार वर्षीय कोर्स

जागरण संवाददाता, हल्द्वानी : उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में स्नातक कोर्स नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी-2020) के तहत चल रहे हैं। इसे वर्ष 2023 में लागू किया गया था। वर्तमान में योग को छोड़ अन्य पाठ्यक्रम तीन वर्षीय व्यवस्था में चल रहे हैं। लेकिन, अब यूओयू प्रशासन चार वर्षीय डिग्री कार्यक्रम की ओर कदम बढ़ाने की योजना बना रहा है। जिसमें बीकाम, बीबीए और बीसीए में चार वर्षीय कोर्स के रूप में संचालित करने की तैयारी है।



यूजीसी-डीईवी में हर पांच साल में कोर्सों के लिए आवेदन करना होता है। बीकाम, बीबीए, बीसीए व बीटीटीएम में चार वर्षीय पाठ्यक्रम लागू करने को अगले वर्ष आवेदन करने पर विचार चल रहा है। - प्रो. पीछी पंत, निदेशक अकादमिक प्रवेश होंगे। लेकिन, अगले-सत्र से नई व्यवस्था के तहत पाठ्यक्रम प्रारंभ होने की उम्मीद है। इसके लिए यूओयू प्रशासन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (व्हाइसी) के दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो में आवेदन की योजना बना रहा है।

दून पब्लिक आई. टी. आई
भास्वत सरकार DGET एवं NCVT श्रम मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त

जीनसारी बोलों में जल्द शुरू होंगे सर्टिफिकेट कोर्स : विश्वविद्यालय में इस सत्र तो फिल्टराल

मुख्य सूचना

सर्वप्रथम। जीनसारी-कागरी क्षेत्र के छात्रों के लिए उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से महात्मा गांधी चित्रकूट मोदय विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों में जल्द ही जीनसारी क्षेत्रीय भाषा को शामिल किया जाएगा। यह जनवरी उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने सरदार पहिलाल राजेन्द्र जनजातीय (पी.जे.) कौशिक, सर्वप्रथम में आयोजित उच्च शिक्षा अकादमिक कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कहा।



यह उद्घरण अधिक से अधिक छात्रों तक उच्च शिक्षा पहुँचाने के लिए है। जीनसारी क्षेत्र के छात्रों को अकादमिक

हल्द्वानी, बरिष्ठ संवाददाता। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की परम्परा एवं कौशल आधारित शिक्षण के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षण को प्रदान करने का उद्देश्य है। अगले वर्ष के छात्र चारवर्षीय पाठ्यक्रमों के साथ-साथ 'ज्योतिष' और 'अभिलेख' के माध्यम से शिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाया जाएगा।

पहल
हल्द्वानी, संवाददाता। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में 80 अंश (अंश) के पाठ्यक्रम को शुरू किया गया। उत्तराखंड के छात्रों के लिए यह एक नई पहल है।

‘वन्दे मातरम्’ पर कार्यक्रमों की श्रृंखला शुरू
हल्द्वानी, संवाददाता। राष्ट्रीय गीत 'वन्दे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने के अवसर में उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में 80 अंश (अंश) के पाठ्यक्रम को शुरू किया गया। उत्तराखंड के छात्रों के लिए यह एक नई पहल है।

‘पर्यावरण और तकनीक का ज्ञान जलदी’
यूओयू के अध्ययन बोर्ड की बैठक में पाठ्यक्रम का किया पुनर्गठन। 'पर्यावरण और तकनीक का ज्ञान जलदी'।



हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) में डॉ. एसआर रंगनाथन की 134वीं ज्यंती पर 'राष्ट्रीय पुस्तकालयाध्यक्ष दिवस' मनाया गया। शुभाशं कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहानी ने दीप प्रज्ज्वलित कर और 'लाइब्रेरी थॉट चॉल' की शुरुआत करके किया प्रो. अरविंद भट्ट और प्रीति शर्मा ने रंगनाथन के योगदान को याद करते हुए पुस्तकालयाध्यक्षों को शिक्षकों का शिक्षक बताया। इस मौके पर आयोजित ऑनलाइन लाइब्रेरी साइंस विषय में 80 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्रो. राकेश रायल आदि मौजूद रहे।



मीडिया की सुर्खियों में विश्वविद्यालय



वैज्ञानिकों के तार रहित संजाल विस्तार यंत्र को सरकारी मान्यता

हल्द्वानी। उत्तराखंड के दूरस्थ गांवों में नेटवर्क की समस्या दूर करने के लिए हल्द्वानी और देहरादून के विश्वविद्यालयों की संयुक्त शोध टीम ने तार रहित संजाल विस्तार यंत्र विकसित किया है। भारत सरकार ने इसे रूपांकन अधिनियम, 2000 के तहत पंजीकृत कर मान्यता दी है। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की सहायक प्राध्यापक रंजू जोशी पांडे ने यंत्र का नमूना तैयार किया। उन्होंने टीम के साथ दो वर्षों तक शोध किया। पांडे ने बताया कि यह यंत्र कम लागत में मौजूदा संकेत को आगे बढ़ाकर उन क्षेत्रों को जोड़ेगा जहां संचार स्तंभ लगाना संभव नहीं है। विश्वविद्यालय इसे 500 से अधिक नेटवर्क विहीन गांवों में लगाने की योजना पर काम कर रहा है। संवाद



रंजू जोशी पांडे

नेटवर्क विहीन क्षेत्रों में संचार के वायरलेस डिजाइन को मिला पेटेंट

जागरण संवाददाता, हल्द्वानी : उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय और श्रीगुरु राम राय विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के शोधकर्ताओं ने संयुक्त रूप से 'डिवाइस फार वायरलेस नेटवर्क एक्सटेंशन' डिजाइन बनाया है, जो दूरस्थ और पर्वतीय क्षेत्रों के नेटवर्क विहीन इलाकों में बेहतर संचार के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस नवाचारी माडल को भारत सरकार के डिजाइंस अधिनियम के तहत पेटेंट प्राप्त हुआ है। डिवाइस का नया डिजाइन यूओयू में सहायक प्राध्यापक डा. रंजू जोशी पांडे ने तैयार किया है। उनके साथ एसजीआरआर की प्रो. गीता रावत, डा. शिल्पी यादव, डा. ज्योत्सना कुकरेती, डा. शार्दूल सेमवाल, डा. जराप्रकाश और ग्लोबल रावत का योगदान रहा है। डा. रंजू ने बताया कि यह डिजाइन भविष्य



डिवाइस फार वायरलेस नेटवर्क एक्सटेंशन का डिजाइन • सौजन्य यूओयू में ग्रामीण एवं पर्वतीय क्षेत्रों के साथ ही नेटवर्क से वंचित स्थानों पर वायरलेस कनेक्टिविटी को बेहतर करने में उपयोगी सिद्ध होगा। साथ ही डिजिटल शिक्षा, टेलीमेडिसिन, ई-गवर्नेंस, आपदा प्रबंधन, कृषि परामर्श सेवाओं को सशक्त बनाने में उपयोगी हो सकता है।

यूओयू-एसजीआरआर की शोध टीम को सफलता

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विवि और देहरादून के श्री गुरु राम राय विवि की संयुक्त शोध टीम ने एक नई उपलब्धि हासिल की है। वायरलेस नेटवर्क को बेहतर बनाने के लिए तैयार किए गए विशेष डिवाइस के



यूओयू में शुक्रवार को 36वीं विद्यापरिषद की बैठक में चर्चा करते कुलपति एवं अन्य।

उत्तराखंड मुक्त विवि खोलेगा नए अध्ययन केंद्र

जागरण संवाददाता, हल्द्वानी : उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) की 46वीं कार्य परिषद की बैठक में विश्वविद्यालय के विस्तार और शैक्षणिक गुणवत्ता को नई गति देने वाले कई महत्वपूर्ण प्रस्तावों को मंजूरी मिल गई। कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में नए व विशेष अध्ययन केंद्रों की स्थापना के साथ ही व्यक्तिगत छात्रवृत्ति योजना के क्रियान्वयन, अस्थायी सहायक प्राध्यापकों की नियुक्ति और राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप अकादमिक सुधारों जैसे अहम प्रस्तावों पर कार्य परिषद ने अपनी संसुति प्रदान की। बैठक में 45वीं कार्य परिषद ने केंद्रीय मूल्यांकन संचालन के लिए मानदेय निर्धारण, सामुदायिक रेडियो अनुभाग में कार्मिकों के चयन, पुनर्निर्माण से जुड़े मामलों तथा 35वीं एवं 36वीं विद्या परिषद में पारित प्रस्तावों को भी मंजूरी दी। विद्या परिषद की

46वीं कार्य परिषद की बैठक में शैक्षणिक विस्तार, भर्ती प्रक्रिया छात्रवृत्ति योजना पर लगी मुहर

कुलपति ने कहा, इन निर्णयों से संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता के साथ प्रशासनिक दक्षता बढ़ेगी



यूओयू की 46वीं कार्य परिषद की बैठक में कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी • सौ. यूओयू

गतिविधियों को मजबूत करने, परीक्षा एवं मूल्यांकन प्रणाली में सुधार तथा नई शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप अकादमिक बदलावों को भी स्वीकृति मिली।

कुलपति प्रो. लोहनी का मानना है कि इन फैसलों से संस्थान की शैक्षणिक

संस्थागत विकास को नई दिशा मिलेगी। बैठक में बाह्य सदस्य एवं हिमालयन चैंबर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष रमेश चन्द्र बिंजोला आफलाइन शामिल हुए, जबकि प्रो. बीएस राजपूत, प्रो. योजना रावत, प्रो. रांची शाह और उच्च शिक्षा विभाग के अपर सचिव

नेपाली छात्रों के पीएचडी में प्रवेश की नई व्यवस्था मंजूर पदों की चयन प्रक्रिया, नए अध्ययन केंद्रों को स्वीकृति

हल्द्वानी, वरिष्ठ संवाददाता। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में मंगलवार को कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी की अध्यक्षता में कार्य परिषद की 46वीं बैठक आयोजित की गई।

कुलसचिव खेमराज भट्ट की ओर से प्रस्तुत कार्यसूची पर चर्चा की गई और कई प्रस्तावों को मंजूरी दी गई। शैक्षणिक पदों की चयन प्रक्रिया, विशेष अध्ययन केंद्रों की स्थापना, व्यक्तिगत छात्रवृत्ति योजना के क्रियान्वयन, अस्थायी

यूओयू की कार्य परिषद की बैठक में कई अहम प्रस्ताव पारित

मानदेय निर्धारण को स्वीकृति दी गई। 35वीं व 36वीं परिषद की संसुतियों के आधार पर नए शैक्षणिक कार्यक्रमों व पाठ्यक्रमों की शुरुआत, विनियमों में संशोधन, शोध के सुदृढ़ीकरण से जुड़े प्रस्तावों को भी अनुमोदित किया गया। हिमालयन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड



मीडिया की सुर्खियों में विश्वविद्यालय



मार्गदर्शक भी बनें शिक्षक: कुलपति

मैनीताल, संवाददाता। डीएससी परिसर में शनिवार को शिक्षक दिवस के अवसर पर भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवीन एनसीसी के डेप्टी सीओ और से यूओयू एवं कुमाऊँ विवि के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी को 'गार्ड ऑफ ऑनर' देकर किया गया। परिसर निदेशक प्रो. संजय पंत ने अतिथियों का स्वागत किया।

समारोह में सेवानिवृत्त प्राध्यापक प्रो. केवी मेलकानी, प्रो. मंजू लता बिष्ट, प्रो. एवी मेलकानी, प्रो. चित्रा पांडे और प्रो. नीता चौरा शर्मा को सम्मानित किया गया। कुमाऊँ विवि के नवीनयुक्त कुलपति प्रो. सतपाल सिंह बिष्ट ने शुभकामनाएं दीं। वहीं, यूओयू के कुलपति प्रो. लोहनी ने नवाचार को अपनाने पर जोर दिया और उपस्थित लोगों को 'नवामुक्त भावत आभयान' की शपथ दिलाई।



यूओयू के वीसी प्रो. नवीन लोहनी को सम्मानित करते कुवि वि के नए कुलपति प्रो. सतपाल बिष्ट व अन्य। स्रोत: कुवि वि

पाइन क्रैस्ट विद्यालय में मनाया शिक्षक दिवस: पाइन क्रैस्ट में शिक्षक दिवस पर विशेष कार्यक्रम और भोज का आयोजन हुआ।

संस्थापक संतोष कुमार ने संबोधित किया। विद्यार्थियों ने शिक्षकों को हस्तनिर्मित कार्ड व उपहार भेंट कर सम्मानित किया।

'विद्यार्थियों के नैतिक मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं शिक्षक'

जासं, हल्द्वानी : उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस पर शनिवार को शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसमें वरिष्ठ विज्ञानी एवं एनएसएआई व एचएफएसआई के पूर्व निदेशक प्रो. शेर सिंह सामंत को विज्ञान एवं हिमालयी अध्ययन के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मान किया गया।

प्रो. सामंत ने कहा कि शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि विद्यार्थियों



प्रो. शेर सिंह सामंत को सम्मानित करते कुलपति प्रो. लोहनी। स्रो. विवि प्रशासन

इन्हें मिलेगा शिक्षाश्री सम्मान

हल्द्वानी : हिमालयन रिसर्च एंड डेवलपमेंट सोसाइटी ने स्पर्श गंगा शिक्षाश्री पुरस्कार की घोषणा की है। इसमें चंद्रशेखर जोशी, मनोज कुमार सती, डा. अनिता नेथानी, मीनाक्षी

प्रो. एनसी लोहनी बने कुमाऊँ विवि के कार्यवाहक कुलपति



कुमाऊँ विश्वविद्यालय में कुलपति का कार्यभार संभालते प्रो. नवीन चंद्र लोहनी। स्रोत: कुमाऊँ विवि

मैनीताल। कुलाधिपति एवं राज्यपाल के निर्देश पर उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय (यूओयू) के कुलपति प्रो. नवीन चंद्र लोहनी ने मंगलवार को

विवि के लंबित प्रशासनिक कार्यों, परीक्षाओं और परिणामों को गति देने की रहेगी चुनौती

लोक भवन में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की तीन पुस्तकों का विमोचन



● जनवाणी संवाददाता, देहरादून

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा तैयार एवं प्रकाशित तीन महत्वपूर्ण पुस्तकों का विमोचन मंगलवार को लोक भवन,

पुस्तकों के माध्यम से आत्मनिर्भरता, नवाचार, ज्ञान, शिक्षा और सतत विकास के साथ देश एवं प्रदेश के भविष्य की दिशा पर विचार प्रस्तुत किए गए हैं। इस अवसर पर

उत्तराखण्ड में बिताए पांच वर्ष जीवन के सबसे महत्वपूर्ण : राज्यपाल



यूओयू की पुस्तकों का लोकार्पण करते राज्यपाल ले. जनरल (सेन) गुरमीत सिंह ● सूवि

राज्य ब्यूरो, जागरण, देहरादून : राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेन) ने कहा कि उत्तराखण्ड में बिताए पांच वर्ष उनके जीवन की सबसे महत्वपूर्ण और भावनात्मक यात्राओं में से एक हैं। सेना में चार दशक की सेवा के दौरान किसी एक स्थान पर तीन वर्ष से अधिक रहने का अवसर नहीं मिला, लेकिन देवभूमि में पांच वर्ष कैसे बीत गए, इसका पता ही नहीं चला। उन्होंने कहा कि यह यात्रा अकेले की नहीं, बल्कि पूरे लोक भवन परिवार,

युवाओं को तकनीक से प्रेम करना सीखना चाहिए : राज्यपाल

जागरण संवाददाता, हरिद्वार : कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के तेजी से बढ़ते प्रभाव के बीच लोकतंत्र के भविष्य और तकनीक की भूमिका पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय में देश-विदेश के विशेषज्ञों ने महामंथन किया। मंगलवार को आयोजित अंतरराष्ट्रीय समिट 'एआई फार डेमोक्रेसी' में एआई के अवसरों, चुनौतियों, लोकतांत्रिक संस्थाओं पर उसके प्रभाव और जिम्मेदार



विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम

स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम

बी.ए., बी.एससी., बी.ए. (योग ऑनर्स), बी.सी.ए. (BCA), बी.बी.ए. (BBA), बी.कॉम. (B.Com.), बी.एड. (ODL), बी.एड. (Special Education), बी.टी.टी.एम. (BTMM), बी.एल.आई.एस. (BLIS)

स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम

एम.ए.- अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति विज्ञान, लोक प्रशासन, समाज शास्त्र, समाज कार्य, विकास अध्ययन (Development Studies), हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, ज्योतिष, संगीत, उर्दू, गृह विज्ञान, योग, शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता एवं जनसंचार, भूगोल, पर्यावरण अध्ययन, मानव अधिकार।

एम.एससी.- इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, साइबर सिक्योरिटी, पर्यावरण विज्ञान, जियो इन्फॉर्मेटिक्स, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी, प्राणी विज्ञान, गणित।

एम.बी.ए.(MBA), एम.सी.ए.(MCA), एम.कॉम.(M.Com.), एम.एल.आई.एस. (MLIS), एम.टी.टी.एम. (MTTM), एम.एड. (Special Education)

डिप्लोमा पाठ्यक्रम

नॉन वुड फॉरेस्ट प्रोडक्ट्स (Non-wood Forest Products), योग विज्ञान, फलित ज्योतिष, वैदिक कर्मकाण्ड, वास्तु शास्त्र, चिकित्सा ज्योतिष, इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, ट्यूरिज्म स्टडीज, कॉमर्शियल हॉर्टिकल्चर (Commercial Horticulture), वैल्यू एडेड प्रोडक्ट्स फ्रॉम फ्रूट्स एण्ड वैजीटेबल्स (Value Added Products from Fruits and Vegetables), जर्नलिज्म एण्ड न्यू मीडिया (Journalism and New Media), नेपाली भाषा, जियो इन्फॉर्मेटिक्स।

सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

पंचायती राज, स्मृति संवर्धन (Memory Enhancement), वैदिक कर्मकाण्ड, फलित ज्योतिष, संस्कृत भाषा, वैदिक ब्रह्माण्ड विज्ञान, गढ़वाली भाषा, नेपाली भाषा, कुमाँऊनी भाषा, ऑफिस मैनेजमेंट, ई-गवर्नेंस एण्ड साइबर सिक्योरिटी, कम्प्यूटर एप्लीकेशन, योग विज्ञान, नैचुरोपैथी, सूचना का अधिकार, साइबर स्पेस और डेटा सिक्योरिटी, फाउंडेशन कोर्स इन स्पेशल एजुकेशन, गैर-काष्ठ वन उत्पाद (Non-wood Forest Products), जियो इन्फॉर्मेटिक्स, डिजिटल मार्केटिंग और प्रबंध, सॉफ्ट स्किल और ई-ऑफिस प्रबंध, टेक्नोलॉजी इनेबल्ड एजुकेशन (Technology Enabled Education), कम्युनिटी रेडियो टेक्नोलॉजी (Community Radio Technology), डेटा साइन्स और एप्लीकेशन, विकास अध्ययन (Development Studies), जैविक खेती (Organic Farming), भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System)।

असिस्टेंट होम स्टे मैनेजर (NCVT द्वारा मान्यताप्राप्त)।

पीएच.डी. (Ph.D.) कार्यक्रम नियमित मोड (Regular Mode) में भी उपलब्ध है।

क्षेत्रीय केन्द्र

- देहरादून : गुरु राम राय (पी.जी.) कॉलेज, देहरादून-248001
0135 - 2720027, dehradun@uou.ac.in
- हरिद्वार : एस.एम.जे.एन. पी.जी. कॉलेज गोविंदपुर, रानी मोड़ के पास,
हरिद्वार - 249401, haridwar@uou.ac.in
- पौड़ी : एच.एन.बी. गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी-246001
01368-223308, pauri@uou.ac.in
- उत्तरकाशी : आर.सी.यू. गवर्नमेंट पीजी कॉलेज, उत्तरकाशी-249193
01374 - 222004, uttarkashi@uou.ac.in
- हल्द्वानी : एम.बी. गवर्नमेंट (पी.जी.) कॉलेज, हल्द्वानी-263139
05946-284149, hadwani@uou.ac.in
- कर्णप्रयाग : डॉ. शिवानंद नौटियाल, गवर्नमेंट पी.जी. कॉलेज, कर्णप्रयाग-246444
8475990960, karnaprayag@uou.ac.in
- पिथौरागढ़ : लक्ष्मण सिंह महर रा. पी.जी. कॉलेज पिथौरागढ़-262502
05964-264015, pithoragarh@uou.ac.in
- रानीखेत : एस.एस.जे.डी.डब्ल्यू.एस.एस.एस. गवर्नमेंट पी.जी. कॉलेज,
रानीखेत-263647 05966-220474, ranikhet@uou.ac.in

आदर्श अध्ययन केन्द्र

- हल्द्वानी : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय मुख्यालय-263139
05946-286082, 16000@uou.ac.in
- देहरादून : उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, यू.सी.एफ. सदन, नियर प्रसार भारती देहरादून-248001
0135-2974379, 11000@uou.ac.in

कुल अध्ययन केन्द्र : 145



Admission
QR Code

हमसे जुड़ें :-



संपादकीय - मंडल

प्रधान संपादक -

संपादक -

सहायक संपादक -

डिज़ाइनर -

प्रो. राकेश चंद्र रयाल

डॉ. शशांक शुक्ल

श्री विनायक तिवारी

सुश्री हर्षिता मेहता

श्री विनायक तिवारी



उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय मार्ग, ट्रांसपोर्ट नगर के पीछे, तीनपानी
बाईपास, हल्द्वानी-263139, नैनीताल, उत्तराखण्ड

